वर्ष 12 अंक 8

श्री सुदर्शन संदेश

15/-

अगस्त 2018

देशी विदेशी भक्तों ने दिव्यधाम में धूमधाम से मनाई श्रीगुरुपूर्णिमा

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में श्री गुरू पूर्णिमा का उत्सव बडी ही धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर देश विदेश से आए भक्तों एवं विशिष्ट व्यक्तियों ने दो दिन चले कार्यक्रम में भागीदारी की एवं सेवादारों ने अपनी अपनी सेवाओं में उत्कृष्टता का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर परम पूज्य गुरूदेव श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज ने संस्थापक स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज व ईष्टदेव का पूजन कर भक्तों को प्रवचन कहें एवं प्रसाद भी प्रदान किया। उन्होंने कहा कि गुरू की सन्निधि में आने के बाद भला ही होता है। इसलिए गुरू वचनों पर विश्वास करके उन्हें मानना चाहिए।

श्री सुदर्शन संदेश

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित

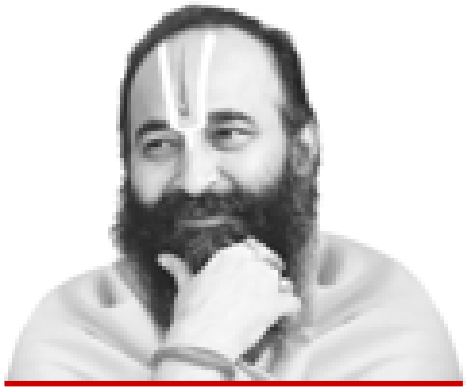

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

प्रवचनांश

जो गुरू के वचनों पर भरोसा करते हैं, परमात्मा भी उनपर अपनी कृपा बरसाते हैं। गुरू ने परमात्मा ने से यह वचन लिया कि जिसे वह परमात्मा की राह में लगाएंगे, परमात्मा उन पर अपनी कृपा अवश्य ही रखेंगे।

गुरुवाणी

जीव पराधीन है। भगवान स्वाधीन हैं। जीव अनेक हैं, श्रीकान्त यानी परमात्मा एक हैं। जीव माया के परवश हैं और माया परमात्मा के अधीन है, यानी परवश है।

इन प्रमाणों से यह स्पष्ट मालूम पड़ता है कि सबको रचने वाला, माया को अपने वश में रखने वाला, सब जीवों को कर्माधीन सुख-दुख भुगतने वाला तो ईश्वर है और माया के परवश कहने वाला, कर्म के अनुसार सुख-दुख नरक स्वर्ग भोगने वाला जो है, सो जीव है। जो यह सामने जगत दिख रहा है, सब माया है यानी माया रचित है। जीव अलग तत्व है, माया और चीज है। परमात्मा दोनों का मालिक है।

-श्रीगुरूमहाराज

छायाचित्र

⏭ *भूखे को अन्न, प्यासे को पानी: यही है लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम की अद्‌भुत कहानी। संस्थापक स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज एवं वर्तमान अधिपति परमपूज्य श्री गुरूमहाराज अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज की कृपा से यहां आने वाले सभी भक्तजनों को भोजन प्रसाद सहज उपलब्ध है।*

पत्रिका में अपने अनुभव व लेख संपादकीय कार्यालय को भेजें।

संपादन मंडल

सलाहकार : डी. सी. तंवर
संपादक : शकुन रघुवंशी (श्रीधर)*
एसोसिएट एडिटर : गीता 'चैतन्य'

संपादकीय पता: श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, सूरजकुण्ड रोड, सेक्टर-44, फरीदाबाद, हरियाणा फोन: 0129-2419555, 717

www.shrisidhdataashram.org
info@shrisidhdataashram.org

स्वत्वाधिकारी, जनहित मानव कल्याण केन्द्र के लिए प्रहलाद शर्मा ने मैसर्स मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794-95, गुरु रामदास नगर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092 से मुद्रित करवाकर ई-9, मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली-110091 से प्रकाशित किया। संपादक : शकुन रघुवंशी*

*अवैतनिक

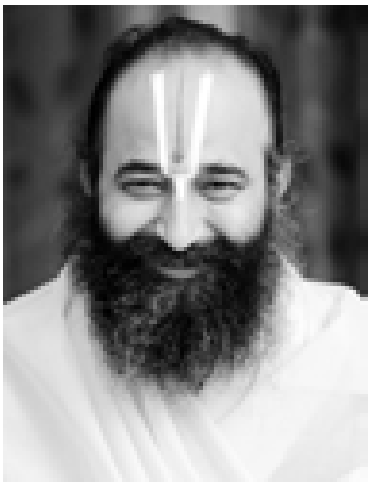

गुरुगीता का जाप करने वाले पर गुरुकृपा निश्चित

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

गुरुगीतामिमां देवि हृदि नित्यं विभावय। महाव्याधिगतैर्दुखैः सर्वदा प्रजपेन्मुदा।। 114।।
गुरुगीताक्षरैकैकं मन्त्रराजमिदं प्रिये। अन्ये च विविधा मन्त्राः कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।115।।

अर्थात् महादेव शंकर माता पार्वती से कह रहे हैं कि हे देवि इस गुरुगीता जो प्रतिदिन पाठ करता है, उसके जीवन में गुरु की कृपा भी अवश्य होती है। गुरु की कृपा को पाने की इच्छा रखने वालों को गुरुगीता अवश्य ही पढनी चाहिए, उसका मनन करना चाहिए। जो इस गुरुगीता का नित्य मनन करता है उसको असीम सुख और शांति प्राप्त होती है। उसके जीवन में असीम शक्ति की प्राप्ति होती है। इस गुरुगीता पर विश्वास रखने वाले को ऐसा भरोसा होता है कि गुरु उसके साथ ही हैं और इस प्रकार वह हर संकट से पार हो जाता है। गुरुगीता का हर श्लोक एक मंत्र है और हर मंत्र अन्य मंत्रों से 16 गुणा क्षमता रखता है। इसका पाठ करने से महाव्याधियां भी नष्ट हो जाती हैं। वास्तव में गुरुगीता के मंत्र महामंत्र हैं जिनका असर भी है और भाव भी है।

अर्थ : हे देवी, इस गुरुगीता को पूर्ण भाव सहित हृदय से धारण करो। महाव्याधियों में घिरे व्यक्तियों को भी आनन्द सहित इसका जाप करना चाहिए। गुरुगीता का प्रत्येक अक्षर मन्त्रों का राजा है। इसके अलावा अन्य मन्त्र इसके सोलहवां हिस्से के बराबर नहीं है। जारी...

वर्षः 15, अंकः 9
अगस्त 2018

कहां - क्या

वैकुंठवासी महाराज
गुरुवाणी 04
आत्मबल जगाती है शरणागति 08
दृढता ही परमात्मा प्राप्ति का मूल साधन 40

गुरुदेव
संदेश 03
गुरू गीता (सरल)– गुरूगीता 05
का जाप करने वाले गुरूकृपा निश्चित
भक्ति में तर्क को स्थान नहीं 10
प्यार करने वाला उसका मूल्य 34
नहीं चाहता

अन्य
संपादकीय : संत न होते जीवन में तो 06
रिसोर्स योरसेल्फ : 07
इंसान चाहता कुछ है और बताता कुछ है, यह भी दुख का स्रोत है
अशोक के पेड का शुभ फल 27
दुर्जन व्यक्ति से सांप अच्छा 28
–डी सी तंवर
भिंडी में छुपे हैं सेहत के लाभ 39
सितंबर माह के पर्व 42

संत न होते जीवन में तो..

संपादकीय : गीता चैतन्य

अक्सर लोग कहते हैं कि सन्त सन्यासी होते हैं, विरक्त होते, ये बात ठीक भी है लेकिन कितनी ठीक है, ये बात है जानने वाली। यदि सन्त सन्यासी होते हैं तो या तो हम सन्यास का भाव नहीं समझते या समझना ही नहीं चाहते। क्योंकि हमारे अनुसार जो संसार का त्याग कर दे वह सन्यासी है, लेकिन यदि सन्तों ने संसार का त्याग किया होता तो आज हमारे पास वेद, पुराण और ग्रंथ नहीं होते, लेकिन सबका कल्याण हो इसलिए सन्तों ने जहाँ स्वयं प्रभु का दर्शन किया वहीं हमारे कल्याणार्थ धर्मग्रंथों की रचना की, क्योंकि सन्तों को हमसे प्रेम है। सन्तों ने सन्यास विकारों से लिया है, जीव मात्र से प्रेम ही तो सन्त के गुण हैं। सन्तों की विरक्ति भी भोगों से होती है, ये संसार में भोग से ज्यादा प्रेम को महत्व देते हैं, क्योंकि प्रेम ही प्रभु प्राप्ति की सीढ़ी है, जो मनुष्य भगवान की बनाई इस दुनिया से प्रेम नहीं कर सकता वह भला भगवान से क्या प्रेम करेगा। सन्त भोग से विरक्त हैं, यह कहना ही सही होगा। आज हमें समाज की कोई परवाह नहीं, परवाह है तो अपनी और अपने बच्चों की, माता पिता की भी नहीं। जबकि सभी सन्तों का कहना है कि माता पिता के रूप में हमें भगवान ही मिलते हैं इनसे प्रेम करो प्रेम ।।

इंसान चाहता कुछ है और बताता कुछ है, यह भी दुख का स्रोत है

शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

जी हां, मैं अपने अनुभव के आधार पर सौ टका सच्ची बात कह रहा हूं कि आज का इंसान चाहता कुछ है और बताता कुछ है और यह भी उसके दुखों का एक बड़ा प्रमुख कारण है। इसे हम ऐसे भी समझ सकते हैं कि व्यक्ति झूठी शान में रहना चाहता है। झूठ ही बोलता है और झूठ ही सुनना उसे पसंद आता है। आमतौर पर एक कहावत है कि कुत्तों को घी हजम नहीं होता है। वैसे कुत्ते और घी का आपस में कोई मेल नहीं है लेकिन कहावत बनाई गई है क्योंकि दोनों बेमेल हैं। इसी आधार पर मैं भी कह रहा हूं कि आदमी और झूठ का आपस में कोई मेल नही है लेकिन आदमी की हसरतों ने उसे झूठ के साथ चस्पा कर दिया है। ऐसे चस्पा कर दिया है कि दोनों एक जिस्म होते प्रतीत हो रहे हैं।

व्यक्ति झूठ बोलने में इतना माहिर हो गया है कि अब उसे सच हजम नहीं होता है। तो हम आदमी के बारे में कह सकते हैं कि आदमी को सच हजम नहीं होता है। वैसे तो मैं आदमी की तुलना कुत्ते से करने का हिमायती नहीं हूं और न ही इसे अच्छा मान रहा हूं लेकिन कुत्ता सांकेतिक शब्द है- एक जानवर का। जो बता रहा है कि आदमी जानवर होता जा रहा है।

आज आदमी चाहता कुछ है और बताता कुछ है। होता कुछ है और दिखाता कुछ है। डाक्टर और शिक्षाविद के वेश में व्यापारी घुस आए हैं, संतों के चोले में अपराधी घुस आए हैं। अंकल बनकर बच्चों का हालचाल पूछने वालों के अंदर से भक्षक जोर मारता है। आप देखेंगे कि रास्ते में पता पूछने वाला सही पता नहीं पूछता है।

वास्तव में ऐसा क्यों होता है?

ऐसा इसलिए होता है कि आदमी शॉर्ट कट से सबकुछ कमा लेना चाहता है, वह बिना योग्यता के भी शौहरत चाहता है। उसका रोल मॉडल तो बड़ा आदमी है, लेकिन उसकी शिक्षा और संघर्ष से खुद को नहीं जोड़ पाता है। वह सूरज बनन रोशनी का बादशाह तो बनना चाहता है लेकिन सूरज की तरह तपिश बर्दाश्त नहीं करना चाहता है। ध्यान रहे कि सफलता का कोई शॉर्ट कट नहीं होता बल्कि सफलता के लिए योग्यता, निरंतरता, सहयोग, अवसर और गुरु (भगवान) की कृपा चाहिए होती हैं। जब ऐसा होता है, तो स्थायित्व होता है। छद्म वेष की पोल खुलकर ही रहती है, लेकिन उपरोक्त पांच की युति से मिलने वाली सफलता स्थायी होती है। जयगुरुदेव!

आत्मबल जगाती है शरणागति

वैकुंठवासी जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं
श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

जब मनुष्य सच्चाई की शरणागति स्वीकार कर लेता है तो अपने आप आत्मबल आ जाता है। वह समभाव हो जाता है। कहता है कि सुख भी तेरा, दुख भी तेरा। यह मन्दिर भी तेरा, यह सोना भी तेरा, यह सफेद पत्थर भी तेरा। तो फिर मैं कौन हूं। मैं तेरा सेवक हूं। मैं तेरी शरणागत हूं। मैं तेरा दास हूं।

भगवान सर्वव्यापक हैं। प्रश्न उठता है कि परमात्मा का कोई लक्षण मिला दीजिए क्योंकि कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति नहीं होती है। क्योंकि वृक्ष पानी से बढ़ता है, पानी पीने से हरा रहता है, पानी देने से फल और फूल देता है। आप कहते हैं कि जो सारे जगत की रचना करता है, वह ब्रह्म है। इसका उत्तर शरणागति मीमांसा में बहुत ही सहज रूप से समझाया गया है। जैसे वृक्ष में परमात्मा का लक्षण नहीं मिलता, उसी तरह जो कुछ यह दिख रहा है, उसमें तो हमको भरोसा नहीं है कि एक में ही परमात्मा का लक्षण मिल जाये। परमात्मा के तो वेदोक्त लक्षण हैं। यदि आप किसी दृश्य-पदार्थ में मिला दीजिए तो मैं क्यों न

मान लूंगा। यदि प्रत्यक्ष में लक्षण नहीं मिलेगा तो सिर्फ प्रमाणपत्र में किस तरह खातिर हो सकेगी। इससे तो आप जीव में या दृश्यमान जगत में परमात्मा का लक्षण मिलाइए, नहीं तो ब्रह्म शब्द का कोई और अर्थ बताइये। आप कहते हैं कि ब्रह्म के सिवाय कोई और दूसरी चीज ही नहीं है। आपने ही कहा है कि जिसके नेत्र से सूर्य निकले, जो सारे जगत को रचता ह, वह ब्रह्म है। तो इस प्रकार का ब्रह्म लक्षण न तो जगत में मिलता है, और न जीव में ही। क्योंकि इतने अनन्त जीव हैं, उनमें से किसी की आंख से सूर्य नहीं निकलता है और न तो दृश्यमान जगत् से कहीं सूर्य पैदा हुआ है। जबकि देव, दानव, नर, वानर, कूकर, शूकर, पेड़, पाषाण इन सबको परमात्मा ने उत्पन्न किया है और उन्हीं परमात्मा के आधार से ये सभी जीते हैं। तो फिर ये ब्रह्म कैसे हो सकते हैं? जिसके पीछे मरण की बला बैठी है। जो इच्छा न रहते हुए भी अनेक रोगों से पीड़ित होता है। जिसमें किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं दिख रही है। जो भूख-प्यास को थोड़ा भी नहीं सह सकता है। ऐसा यह पाकर जीव परमात्मा कैसे हो सकता है?

यदि सब ब्रह्मा होता तो एक रस होता, एक तरह से होता है, भिन्न रूप होने पर भी एक स्वभाव होता। सो तो दिखता ही नहीं है। आप लोगों के मुख से यह भी सुना है कि जो पाप करता है, वह वैसा ही फल पाता है। इन सब बातों से तो यह मालूम पड़ता है कि कर्म करने वाला कोई और है तथा कर्म के मुताबिक सुख-दुख, नरक-स्वर्ग देने वाला कोई और है। जो कर्म के मुताबिक सुख-दुख, नरक-स्वर्ग भोगने वाला है, वह तो जीव है और कर्म के मुताबिक जो सुख-दुख का दाता है, वही ब्रह्म या परमात्मा या ईश्वर है।

जीव पराधीन है। भगवान स्वाधीन हैं। जीव अनेक हैं, श्रीकान्त यानी परमात्मा एक हैं। जीव माया के परवश है और माया परमात्मा के अधीन है, यानी परवश है।

इन प्रमाणों से यह स्पष्ट मालूम पड़ता है कि सबको रचने वाला, माया को अपने वश में रखने वाला, सब जीवों को कर्माधीन सुख-दुख भुगतने वाला तो ईश्वर है और माया के परवश कहने वाला, कर्म के अनुसार सुख-दुख नरक स्वर्ग भोगने वाला जो है, सो जीव है। जो यह सामने जगत दिख रहा है, सब माया है यानी माया रचित है। जीव अलग तत्व है, माया और चीज अलग हैं। परमात्मा दोनों का मालिक है यह संगति तो सीधी मिल सकती है जैसे-

गो गोचर जहं लगि मन जाई।
सो सब माया जानों भाई।।
(मानस)

जो पाप करता है, वह वैसा ही फल पाता है। इन सब बातों से तो यह मालूम पड़ता है कि कर्म करने वाला कोई और है तथा कर्म के मुताबिक सुख-दुख, नरक-स्वर्ग देने वाला कोई और है।

बाबा कहते हैं

भक्ति में तर्क को स्थान नहीं

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज,
पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

बहुत से पढ़े-लिखे लोगों को ऐसा लगता है कि सत्संग अच्छा नहीं होता। परमात्मा कहां है? कौन है? कैसा है? यह किसने देखा? हमें दिखाओ तो जानें। ऐसे नेक तर्क-कुतर्क करने लगते हैं। बहुत सारे कहते हैं कि सत्संग तो हम टी.वी. चैनल पर सुन लेंगे। इतनी दूर आने की और भीड में परेशान होने की क्या जरूरत है। बड़े दु:ख की बात है कि सच्चाई को हम नजरअंदाज करते हैं और उस पर सवाल करते हैं जबकि गलत चीजों को विज्ञापन के कारण सहजता से स्वीकार कर लेते हैं। बेमतलब की चीजों को हम अच्छा मान रहे हैं। जो असलियत नहीं है उसको हम पूर्ण स्वीकार कर रहे हैं। कितने दु:ख की बात है। कितने अफसोस की बात है! क्या यही विद्या का प्रतिफल है कि वास्तविकता को झुठला देना और झूठ को वास्तविकता मान लेना। संसार की वस्तुएं तभी तक हैं जब तक हम हैं। ये वस्तुएं तब भी मौजूद थीं जब हम नहीं थे और जब हम नहीं रहेंगे तब भी रहेंगी।

अगर हम करोड़ रुपये जोड़ कर मरे तो मरे, अरब जोड़ कर मरे तो मरे, खरब जोड़ कर मरे तो मरे; क्योंकि हमने वह अपना लक्ष्य बना लिया। लक्ष्य उसको बनायें जिसको हम साथ ले जायें। जो वस्तु हमारे साथ नहीं चल

सकती, उसको लक्ष्य नहीं मानना चाहिये, वह लक्ष्य झूठा है, मिथ्या है। वैसे ये वस्तुयें हमको चाहिये। जब तक अन्तिम श्वांस चलेगी, तब तक भी हमें चाहिये और इसके बाद भी चाहिये क्योंकि अन्त्येष्टि क्रिया भी आजकल बड़ी महंगी हो गई है। यह भी दो-चार हजार बिना नहीं होती। इसलिये धन की आवश्यकता तो है पर वह हमारा लक्ष्य नहीं। आजकल हम उसको लक्ष्य मान बैठे हैं। कई कहते हैं कि टी.वी. आदि पर कथा सत्संग चल रहे हैं, सत्संग में जाने से क्या लाभ? पर दर्शन करने स्पर्श होने से जिह्वा द्वारा परमात्मा का नाम लेने से (जिस के मुख में प्रभु का नाम नहीं वह दुर्गन्धमय है चाहे वह लाखों प्रकार की सुगन्धियां लगा ले), कानों द्वारा कथा का अमृत रस पीने से पाप कट जाते हैं, ऐसा वेद पुराण कहते हैं। शरीर में आनन्द रस की अनुभूति होती है–

दरस परस मज्जन अरु पाना।
हरइ पाप कह बेद पुराना।।

ज्ञात हो कि प्रत्यक्ष में आने से मानव शरीर से रश्मियां निकलती रहती हैं। हर प्राणी में रश्मियां हैं, मानव में विशेष रश्मियां हैं। मानव की अपेक्षा देवताओं में हमसे ज्यादा तेज रश्मियां होती हैं और परमात्मा पूर्ण ज्योतिस्वरूप है। वह ज्योतिस्वरूप है तभी तो उसकी रश्मियां इतनी तीव्र हैं कि उससे चान्दणा फैल रहा है।

बाबा नानकदेव जी ने नूर कहा, चान्दणा कहा–'अल्लाह अकबर नूर उपाया।' मुसलमान उसे नूर कहते हैं–नूर-ए-जहां, नूर-ए-इलाही अर्थात दिव्य प्रकाश। और उसी को हमने ज्योति कहा कि वह परमात्मा ज्योति स्वरूप है, चान्दणा है। उस ज्योति का दीदार करो, उसे देखो, ज्योति के दर्शन करो। वह परमात्मा ज्योतिर्मय है अर्थात् दिव्य प्रकाश वाला है। आगे वे विचार करते हैं कि यह रोशनी तो चोरी की हुई है। इसका मतलब है कि ये कहीं और से किरणें ले रहे हैं। डिवाइन लाइट, सुप्रीम लाइट तो वह परमात्मा है। उसके द्वारा ये सब प्रकाशमान हैं। वेद भी इस बात को स्वीकार करता है–'चन्द्रमा मनसो जातः चक्षोः सूर्यो अजायत'। उस परम ब्रह्म परमात्मा से चन्द्रमा का प्रादुर्भाव हुआ और नेत्रों से सूर्य का प्रादुर्भाव हुआ। तो सत्संग में आना इसलिए अनिवार्य है कि बिना आये वो रश्मियां कैसे प्राप्त होंगी? टेलीविजन के ऊपर रश्मियां नहीं जा सकती, केवल चेहरे जा सकते हैं। केवल वाणी जा सकती है, सरसता नहीं जा सकती, माधुर्यता नहीं जा सकती, सौम्यता नहीं जा सकती। कान उसका पान कर सकते हैं पर जिह्वा नहीं कर सकती।

हमारे समाज में लोग कलियुग के प्रभाव की महिमा है कि ऐसा मानने लग गये कि सत्संग में क्या रखा है? अजी सत्संग तो सब उम्र आयेगी तब सुन लेंगे, अभी सत्संग की उम्र नहीं है हमारी। अच्छा भाई! तेरी मर्जी है।

इस प्रकार की बात करने वालों ने सत्संग को कितना नीचा मान लिया है, कितना कमजोर मान लिया है। यह हमारा कितना दुर्भाग्य है। सत्संग कितनी बुरी चीज मान ली है। और कहते हैं, अभी तो हमारी उम्र भी नहीं हुई है। बहुत सी जगह तो मैंने ऐसा सुना है कि सत्संग में तो पापी जाते हैं; हमने कौन-सा पाप किया है जो सत्संग में जायें। इससे मालूम होता है कि शंकर भगवान हम सब से ज्यादा पापी हैं। जब पापी सत्संग में आते हैं तो शंकर भगवान के समान पापी नजर नहीं आता। क्यूं? क्योंकि वह भगवान से एक ही वरदान मांगते हैं बार-बार–

बार-बार बर मांगउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सत्संग।।

रंगनाथ का मतलब है–भगवान नारायण। तीनों लोकों में रमणशील जो हैं वह रंगनाथ हैं। वह अणु-अणु, कण-कण, जर्रे-जर्रे में समाये हुए हैं।

हे परमात्मा श्री हरि नारायण जी! यदि मेरी तपस्या से आप खुश

हो गये हों, तो संसार तो क्या-क्या मांगता है, मुझे पता नहीं है, पर मैं जो मांगता हूं वह मुझे दे दो।

भगवान् से शिवजी कह रहे हैं कि 'बार-बार बर मांगउँ', 'बार-बार' का मतलब है–एक बार नहीं अपितु सौ बार, लाख बार और अनगिनत बार। 'बार-बार' की गिनती नहीं और 'फिर' शब्द का अन्त नहीं है। जैसे हम कोई सत्संग की कथा सुना रहे हैं, या जो कुछ कह रहे हैं और आप एक बार ही बोलेंगे, 'फिर'। हम फिर आधा घंटा बोलेंगे। आप फिर कह दोगे, 'फिर'। फिर आधा घंटा बोलेंगे, तो आप फिर कह दोगे, 'फिर'। तो फिर का अन्त नहीं होता और 'बार-बार' की गिनती नहीं होती। भगवान् शिव कोई साधारण नहीं थे, वह वेदों के निर्माणकर्ता हैं। वह कहते हैं कि, 'बार-बार बर मांगउँ', जितनी बार कहोगे परमात्मा उतनी बार एक ही वरदान मांगूंगा अगर आप मुझ से खुश हो गये हो–'हरषि देहु श्रीरंग' हे श्री के साथ में रमण करने वाले श्री भगवान! (श्री नाम लक्ष्मी का है–श्रीदेवी और रमण नाम उसके साथ रमण करने वाले का है) अर्थात् हे श्री नारायण जी! यही मुझे दे दो। क्या दे दूं? पद सरोज। केवल सत्संग ही नहीं चाहिये, आपके कमल रूपी चरणों की सेवा भी करता रहूं, उनका अनुसरण करता रहूं शरणागत रहूं और आप ही के नाम की भक्ति करता रहूं। मुझे सदा सत्संग मिलता रहे।

जो हम ने मानवता धारण की, ईश्वर से मिलने का लक्ष्य बनाया और पथ पर गमन कर दिया; बिना सत्संग के हम चल नहीं पायेंगे, क्योंकि–

बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।

बिना सत्संग के विवेक नहीं होता। हमारे प्रेमी पूछते हैं कि महाराज जी! हमें बता दो कि ज्ञान और विवेक में कितना अन्तर है? हमने कहा कि ज्ञान और विवेक में जमीन और आसमान का अन्तर है; बड़ा लम्बा अन्तर है। ज्ञान एक ऐसी वस्तु है जो पशु-पक्षी को भी है और छोटे बच्चे को भी है और बुड्ढे को भी है, जवान को भी है और हर जीव को है। चींटी जो है, उसको भी है। एक ओर आप नमक डाल दीजिए और दूसरी तरफ मीठा; चीनी आदि डाल दीजिए तो मेरे प्रेमियो! चींटी चीनी की तरफ जायेगी। इसका मतलब है कि उसको ज्ञान है कि वह नमक है और यह चीनी है। अगर उसको ज्ञान नहीं होता तो वह किसी भी ओर को चली जाती। हित-अनहित का, खाने-पीने का, पहनने-ओढ़ने का ज्ञान हर किसी को है। इसलिये ज्ञान एक बहुत छोटी, साधारण चीज है। मुझे अगर ज्ञान आ गया, पढ़कर के विद्वान बन गया तो मैं केवल पुस्तकें पढ़ सकता हूं, ग्रन्थ पढ़ सकता हूं, परन्तु उस परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता। उनको पढ़कर मैं तर्क कर सकता हूं, वितर्क कर सकता हूं और सीना फुला कर यह कह सकता हूं कि क्या कोई मेरे सामने शास्त्रार्थ करने वाला है? परन्तु मैं नर्क को जाऊंगा। क्यूं जाऊंगा? इसलिये जाऊंगा कि मैंने उस विद्या का लाभ नहीं लिया। मैंने तो विवाद किया। मैं धन से भी मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि 'धनं मदाय'–धन मैंने मद के लिये कर लिया। ये मेरे साथ कैसे बैठ सकते हैं झुग्गी-झोंपड़ी वाले? मैं अरबपति, खरबपति, बिड़ला, टाटा, डालमिया हूं और ये झुग्गी वाले मेरे साथ कैसे बैठेंगे?–'धनं मदाय'। इसलिये धन से मानवता नहीं रह सकती, धन से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। धन में भेद है, मद है और विद्या में विवाद है। तो विद्या के द्वारा भी उस परमात्मा को प्राप्त करना सहज नहीं। और ध न के द्वारा भी सहज नहीं। अब सहज क्या है?

सत्संग के द्वारा उस परमात्मा को प्राप्त करने के लिये बहुत पैसा खर्च नहीं करना पड़ता; बिल्कुल नहीं। उसके लिये बहुत बड़े यज्ञों की जरूरत नहीं क्योंकि यज्ञ करने से, दान देने से आपको अभिमान होगा। वह परमात्मा अभिमान से हजारों हजारों मील दूर रहता है। वह

आता ही नहीं। वह परमात्मा मिलेगा सत्संग में। तभी तो शिवजी महाराज ने सत्संग की प्रार्थना की।

गरुड़ जी भगवान को अभिमान आ गया कि मैंने युद्ध भूमि में राम को बचाया है। ब्रह्मा जी कहने लगे, गरुड़ जी! मुझ से तो कह दिया, पर किसी और से न कहना। शिवजी के पास पहुंचे। शिवजी ने कहा कि देख! आज तो मुझ से कह दिया फिर कभी दोबारा इसके लिए मत आना मेरे पास और किसी और को भी मत कहना। कहने लगे कि वाह जी! क्यूं न कहूं? मैंने इतना बड़ा महान कार्य किया है। कहूं नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है? नारद जी मिल गये। नारद जी कहने लगे, गरुड़ जी! आज व्यग्र हो रहे हो, चिन्तित हो, उदासीन से लग रहे हो, बात क्या है? बोले, बात यह है कि मैं हर लोक में गया और सबने मुझे यही कहा कि राम जी को बचाने की बात किसी को आइन्दा दोबारा मत कहना। मेरे दिमाग में नहीं आता कि ऐसा क्यूं है? नारद जी कहने लगे, गरुड़ जी! आप नरकगामी हो जाओगे। इस मोह को भंग करो। गरुड़ बोले कि मेरा यह मोह कैसे भंग हो? मैंने राम को नागपाश से छुड़ाया है, यह सच है। पर मेरा मोह कैसे भंग हो? नारद जी बड़े सुन्दर शब्दों में कह रहे हैं कि देखो गरुड़जी–

तबहिं होई सब संसय भंगा।
जब बहु काल करिअ सतसंगा।।

यानी एक दिन नहीं, बहुत समय तक, तुम गरुड़ जी! सत्संग करते रहो तब तुम्हारा मोह भंग होगा, उससे पहले नहीं हो सकता। अर्थात् मोह भंग होने के लिये सत्संग की आवश्यकता है।

गुरु वन्दना

गीत गाता हूं अब मैं तुम्हारे लिये।
गुनगुनाता हूं अब मैं तुम्हारे लिये।।
तुम ही गुरुदेव हो अब मेरी जिन्दगी।
तुम ही आराध्य मेरे तुम्हीं बन्दगी।
मुस्कराता हूं अब मैं तुम्हारे लिये।।

गीत गाता ...

इससे पहले मुझे अपनी ही चाह थी।
और अपनी ही खुशियों की परवाह थी।
छटपटाता हूं अब मैं तुम्हारे लिये।।

गीत गाता ...

एक बस आपकी ही मुझे कामना।
भक्ति इसको कहो या कि आराधना।
जय मनाता हूं अब मैं तुम्हारे लिये।।

गीत गाता ...

पास कुछ भी नहीं जो चढ़ाऊं तुम्हें।
जो भी है वो दिया है तुम्हीं ने मुझे।
सिर झुकाता हूं अब मैं तुम्हारे लिये।।

गीत गाता ...

मुझको कष्टों की चिन्ता नहीं अब रही।
बांह मेरी जब से है तुमने गही।
झूम जाता हूं अब मैं तुम्हारे लिये।।

गीत गाता ...

✦ ✦ ✦

मेरे गुरु दरबार के देखो नजारे।
गुरु सुने सबकी, बैठ प्रभु के द्वारे।। मेरे गुरु ...
गुरु दरबार में जो भी मन से आया है।
गुरु दरबार से उसने सब पाया है।
रात दिन बांटे दाता, भरे हैं भण्डारे।। मेरे गुरु ...
गुरु दरबार की महिमा निराली है।
सब कहें दाता चुप रहता सवाली है
दाता जाने सब तेरा, ना कुछ छपा रे।। मेरे गुरु ...

लेख

तुम बोलते वक्त सजग होते हो, सुनते वक्त नहीं होते

उस गुरु की हमेशा सेवा करें जिसने राम नाम का धन पाया है बिना राम के नाम हृदय में अंधेरा होता है।

तुम बोलते वक्त सजग होते हो, सुनते वक्त सजग नहीं होते। ..और ऐसा किसी धर्म सभा में ही होता हो, ऐसा नहीं है, जब भी कोई दूसरा तुमसे बोलता है, तभी तुम सजग नहीं होते क्योंकि एक इंटरनल डायलॉग है, एक भीतर चलनेवाला वार्तालाप है, जिसमें तुम दबे हो। दूसरा बोले जाता है। तुम ऐसा भाव भी प्रकट करते हो कि मैं सुन रहा हूं लेकिन वह भाव-भंगिमा है, भीतर तुम बोले जा रहे हो। और जब तुम भीतर बोल रहे हो तो तुम किसको सुनोगे? तुम, भीतर जो बोल रहा है, उसको ही सुनोगे। क्योंकि बाहर के बोलनेवाले की आवाज तो तुम्हारे तक पहुंच ही न पाएगी। तुम्हारी अपनी आवाज की गूंज काफी है। ..और इसलिए तो तुम्हें नींद मालूम होने लगती है। क्योंकि तुम अपने से ऊबे हुए हो।

जब तुम बोलते हो, तब तुम थोड़े सजग होते हो। लेकिन जब तुम सुनते हो, तब तुम मूर्छित होने लगते हो, क्योंकि तुम अपने से ऊबे हुए हो। यह बात तो तुम कई दफे भीतर कर चुके हो जो आज फिर कर रहे हो। यह तो पुनरुक्ति है। उससे ऊब पैदा होती है। उससे नींद मालूम होने लगती है। वह भी बचाव है और वह इस बात की खबर है कि भीतर एक वार्तालाप चल रहा है। भीतर का वार्तालाप जो तोड़ देगा, वही सुनने में समर्थ

होता है। श्रवण की कला तब उपलब्ध होती है, जब भीतर का वार्तालाप बंद हो जाता है। और एक क्षण को भी भीतर का वार्तालाप बंद हो जाए तो तुम पाओगे आकाश खुल गया, अनंत आकाश खुल गया। और सब जो अनजाना था, जाना हो गया। जिसकी थाह न थी, उसकी थाह मिल गयी, जो अपरिचित था, उससे परिचय बना। जिससे कोई पहचान न थी,जो अजनबी था, वह अपना हुआ। अचानक!

यह जगत तुम्हारा घर है। अगर एक क्षण को भी तुम्हारा भीतर का वार्तालाप टूट जाएज्सारे सत्संगों का, सारे गुरुओं का एक ही लक्ष्य है कि किस भांति तुम्हारे भीतर का वार्तालाप तोड़ा जाए। वे उसे ध्यान कहें, मौन कहें, योग कहें, नाम स्मरण कहें, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सारी चेष्टा यह है कि भीतर तुम्हारी जो एक सतत धारा चल रही है शब्दों की, उसको छिन्न-भिन्न कैसे करना! उसमें बीच में खुली जगह कैसे आ जाए! थोड़ी भी देर को खुली जगह आ जाए तो तुम समझ पाओगे कि गुरू क्या कह रहे हैं।

गुरु तो ज्ञान का सागर है, अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार ही हम उनसे कुछ पाते हैं। गुरु देने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं, पर हममें यह क्षमता होनी चाहिए कि हम उस देने की प्रक्रिया को कितना आत्मसात कर पाते हैं।

श्री सिद्धदाता आश्रम फेसबुक पर भी

श्री सिद्धदाता आश्रम में आयोजित होने वाले पर्वों एवं क्रियाकलापों की जानकारी फेसबुक पर पाने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर जाकर लाइक करें।

www.facebook/shrisidhdataashram

Shri Sidhdata Ashram is now on Facebook.

You can watch photographs of latest events, weekly message from Shri Guruji ans get regulat updates from Ashram on your facebook account.

To receive updates on your Facebook account visit Ashram's FB page

www.facebook.com/shrisidhsataashram

and click on Like

also do visit our website www. shrisda.org to watch latest News, Updates, Photographs and to download Books, Monthly Magazine and Wallpapers.

लेख

रक्षासूत्र बना रक्षाबन्धन

लोग इस त्योहार को खुशी और प्रेम से मनाते हैं और एक-दूसरे की रक्षा करने का वचन देते हैं।

रक्षाबंधन में रक्षा सूत्र बंधा जाता है। इनको वेदज्ञ मन्त्रों से अभिमन्त्रित करते थे। तप और त्याग की शक्ति का मिलन वेद मन्त्रों की शक्ति के साथ होने से सोने पर सुहागा का काम करता है।

रक्षाबंधन हर साल श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन धूम-धाम से मनाया जाता है। सदियों से चली आ रही रीति के मुताबिक, बहन भाई को राखी बांधने से पहले प्रकृति की सुरक्षा के लिए तुलसी और नीम के पेड़ को राखी बांधती है जिसे वृक्ष-रक्षाबंधन भी कहा जाता है। आजकल इसका प्रचलन नहीं है। पौराणिक कथाओं में भविष्य पुराण के मुताबिक, देव गुरु बृहस्पति ने देवस के राजा इंद्र को वृत्रासुर के खिलाफ लड़ाई पर जाने से पहले अपनी पत्नी से राखी बंधवाने का सुझाव दिया था। इसलिए इंद्र की पत्नी शचि ने उन्हें राखी बांधी थी।

एक अन्य पौराणिक कथा के मुताबिक, रक्षाबंधन समुद्र के देवता वरूण की पूजा करने के लिए भी मनाया जाता है। आमतौर पर मछुआरे वरूण देवता को नारियल का प्रसाद और राखी अर्पित करके ये त्योहार मनाते हैं। इस त्योहार को नारियल पूर्णिमा भी कहा जाता है। रक्षाबंधन दो लोगों के बीच प्रेम और इज्जत का बेजोड़ बंधन का प्रतीक है। एक-दूसरे की रक्षा करने का वचन का पर्व है।

लेख

गृहस्थ में रह करें धार्मिक सेवा

मन का अवरोध नहीं टूटा तो चाहे घर पर हों या जंगल में, कभी भी सच्ची साधना नहीं हो सकती।

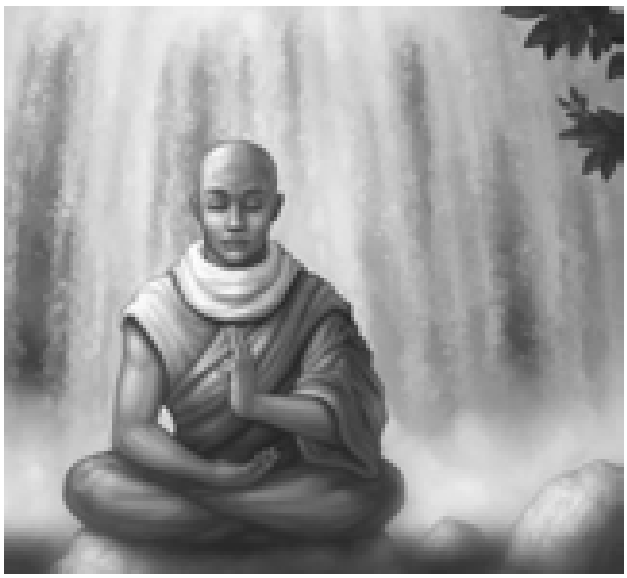

यदि आप मन को साध लें तो फिर भले आप गृहस्थ हैं, वानप्रस्थी हैं या संन्यासी, आपको मोक्ष मिल जाएगा। यह एक मानसिक अवस्था है कि आप सोचते हैं कि मैं गृहस्थ हूं और वह संन्यासी है। वास्तव में यह एक विचार है जो आपका पीछा करता है। यदि आप गृहस्थ धर्म त्याग कर संन्यासी बन जाएं और जंगल में चले भी जाएं तो भी यदि आपने मन को नहीं साधा है तो यह जंगल में भी आपको गृहस्थ बनाए रखेगा। आपका मन आपके अहंकार का स्रोत है। वही तय करता है कि आप बाहर से भले कुछ हों, अंदर कैसे विचार रखेंगे! ऐसे में मनुष्य का प्रयत्न होना चाहिए कि वह मन को साध ले। कोई मनुष्य भले ही संसार का त्याग कर संन्यासी बन जाए, फिर भी यदि विचार नहीं बदला तो जंगल भी घर हो जाएगा, जबकि यदि विचार बदल गया तो घर में रहकर भी संन्यास की साधना की जा सकती है। वास्तव में सच्चाई यह है कि वातावरण के परिवर्तन से क्षणिक सहयोग मिल सकता है लेकिन यदि आपके मन में चलने वाले विचार नहीं बदले, मन का अवरोध नहीं टूटा तो चाहे घर पर हों या जंगल में, कभी भी सच्ची साधना नहीं हो सकती।

कर्म करने की आजादी इसी मानव शरीर का सौभाग्य

प्रेम लोगों को आकर्षित करता है तो दूसरी ओर घृणा लोगों को विकर्षित करती है। घृणा से जितना हो सके, उतना बचो।

पिछले जन्मों में हो सकता है, कि तुमने अपने भीतर कुछ धन पैदा किया हो। इस जीवन में तुम या तो उसमें कुछ जोड़ सकते हो या उसे लुटा सकते हो लेकिन निश्चित रूप से उसका कुछ गुण तुम्हारे जीवन में रहेगा। हालांकि अचेतनापूर्वक वह भले ही व्यर्थ हो जाए। इसलिए तुम्हारी साधना के कारण हो सकता है कि वह धन भौतिक सुख के रूप में व्यक्त हो, जैसे कि एक अच्छा घर, एक उचित वातावरण या हो सकता है कि तुम्हारे आसपास अच्छे लोग हों।

इन सबके बावजूद हो सकता है कि तुम इनका उपयोग न कर पाओ और बस उसी में संतुष्ट बने रहो। यह एक पूरा चक्र है। क्यों मैं बार-बार कहता हूं कि पूरा खेल सांप और सीढ़ी के खेल की तरह है, वह तुम्हें संतुष्ट बना सकता है और यही कारण है कि तुम सांप से होकर नीचे उतर आते हो। तब जैसे ही दुख आता है, कि तुम फिर से खोजना शुरू करते हो और विकास होता है। तुम इसे व्यर्थ करके पुन: नीचे आ सकते हो।

यह मूर्खों का मार्ग है अपनी ऊर्जा को व्यर्थ करना। लेकिन कोई व्यक्ति जिसमें पर्याप्त विवेक है, उसे अपनी हरेक सांस को भी विकास की ओर एक कदम के रूप में लेना चाहिए। यह बिल्कुल संभव है। जैसा

कि उसने बताया कि उसे याद दिलाई गई थी। किसी व्यक्ति को सैंकड़ों बार याद दिलाने के बाद भी अगर वह तब भी नहीं जागता है, अगर वह तब भी अपने सुखों में पड़ा रहता है तो हम क्या कर सकते हैं? वह बर्बाद हो जाएगा। उसे एक बार फिर से दुख भोगना पड़ेगा और तब शायद जाकर वह विकास की तलाश करे।

अगर अंतर लाना है तो वह केवल जागरूकता द्वारा लाया जा सकता है, कोई और तरीका नहीं है। यह जरूरी नहीं कि जागरूकता बस सूखी हुई हो। जब यह प्रेम से भरी होती है, तो जागरूकता फिर कई गुना हो जाती है। प्राय: मानसिक सजगता को जागरूकता समझ लिया जाता है लेकिन जागरूकता मात्र मानसिक सजगता नहीं है, यह एक अपेक्षाकृत बहुत बड़ा आयाम है। जब तुम्हारे भीतर जागरूकता पैदा हो जाती है फिर प्रेम और करुणा स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं।

जो चाहा वो मिला
तो सफलता है।
पर जो मिले उसे
चाहना प्रसन्नता ।।

गुरु भक्ति

श्री कृष्ण सुदामा से कहते हैं ''मैं तेरे सब कष्ट हर लूंगा।'' सुदामा बोले, ''नहीं भगवन्, आपकी परम कृपा है, यह भोग तो मुझे ही भोगने होंगे।'' सुदामा भगवान के अति प्रिय सखा थे। वह जानते हैं कि भगवान उनके संकटों को पल में हर सकते हैं, लेकिन वह यह भी जानते हैं कि यह उनके कर्मों के फल हैं; जिनका आस्वादन उनको ही करना है। यह चरित्र सुदामा का है जो अन्यान्य संकटों के बाद भी प्रसन्न हो रहे हैं और भगवान के नाम का भजन कर रहे हैं। दूसरी तरफ भगवान का चरित्र है, उनकी कृपा है कि वह सच्चे जीव के कुशलक्षेम का पूरा ख्याल रखते हैं। भगवान ने सुदामा के लिये सुदामा पुरी का निर्माण कर दिया जो वास्तव में स्वर्ग से भी अधिक ऐश्वर्यशाली व चमक-दमक में अद्वितीय थी। सोचने वाली बात हो सकती है कि सुदामा पर भगवान ने ऐसी कृपा क्यों की? लेकिन भगवान की कृपा में कारण नहीं ढूंढने चाहिए। सुदामा में मानवता के गुणों को देखकर ही भगवान ने उनपर अपनी कृपा वर्षा की।

लेख

धर्म से जुड़ने पर हम स्वस्थ और सुखी हो जाते हैं

जीवन रूपी मक्खन घी बन जाएगा, उसके बाद आनंद की कोई सीमा नहीं रहेगी।

अधिकांश लोग धार्मिक कार्यों में रुचि लेते हैं इसलिए क्योंकि वे अपने ईश्वर में सच्ची आस्था रखते हैं। मगर क्या आप जानते हैं कि धर्म-कर्म के कार्यों से न सिर्फ आप अपने ईश्वर को प्रसन्न करते हैं बल्कि खुश भी स्वस्थ और सुखी रहने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इन तरीकों को अपनाकर आप धर्म के माध्यम से सुखी और स्वस्थ भी रह सकते हैं।

जब आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेना शुरू कर देते हैं तो आप स्वत: ही जंक फूड का सेवन कम कर देते हैं। जंक फूड का सेवन कम करने का अर्थ है स्वास्थ्य की बेहतरी।

धर्म-कर्म में हिस्सा लेने वालों की उम्र नास्तिक लोगों से अधिक होती है। ऐसा इसलिए होता है कि अधिकांश धार्मिक लोग धूम्रपान करना छोड़ देते हैं।

चेहरे पर सदैव रहती है मुस्कान

धार्मिक लोग गैर धार्मिक लोगों की तुलना में अधिक खुश रहते हैं। यह खुशी धार्मिक कार्यों में रोजाना हिस्सा लेने पर पैदा होती है।

धार्मिक गतिविधियों से आपके आत्मविश्वास में भी इजाफा होता है। पूजा पाठ करने वाले लोगों में बाकी लोगों की तुलना में आत्मविश्वास अधिक रहता है।

ईश्वर में आस्था रखने वाले अपने गुस्से पर काबू करने की भी ताकत रखते हैं। भगवान को नहीं मानने वाले लोग अपने जीवन में अधिक गलतियां करते हैं।

ऐसे बुजुर्ग लोग जो कभी अपने जीवन में भगवान को मानते थे, उनके जल्दी स्वस्थ होने की संभावना बाकी लोगों से अधिक होती है। इसके साथ ही यह बात भी सामने आई कि भगवान को मानने वाले डिप्रेशन में नहीं जाते।

भजन कीर्तन में समय बिताने वाले लोगों का ब्लड प्रेशर भी नियंत्रित रहता है। वह लोग जो अक्सर मंदिर और चर्च में जाकर भगवान के आगे सिर झुकाते हैं, उनके सभी तनाव छू–मंतर हो जाते हैं और इस कारण उनका ब्लड प्रेशर भी नियंत्रित रहता है।

'शक' करने से 'शक' ही बढ़ता है। 'विश्वास' करने से 'विश्वास' बढ़ता है! यह आपकी इच्छा है कि आप किस तरफ बढ़ना चाहते हैं ।।

भाव कुभाव अनख आलस हूं

बाबा श्री गोस्वामी जी कहते हैं कि भाव से बिना भाव के ही बैर से या आलसीपन से ही कैसे भी नाम लिया जाय प्रभु का होता हमेशा कल्याण ही है । बाबा श्री गोस्वामी जी ही नहीं सभी सन्तों का यही मत है कि भगवान का नाम किसी भी समय किसी भी अवस्था में लिया जाय हमेशा शुभकारक ही होता है । क्योंकि नाम का अपना प्रभाव होता है , हम सभी के भी कुछ न कुछ नाम हैं और सभी के नाम काम चलाने की गरज से ही रखे जाते हैं , अब सोचिए यदि किसी का कोई नाम न हो तो हम उसे कैसे बुलायेंगे , जैसे यदि कोई कहीं खो जाय तब भी उसे ढूंढ़ने के लिए भी नाम का होना जरूरी ही है, मान लीजिए कोई व्यक्ति होटल में किसी कमरे में बैठा हुआ हो तब हम सबका दरवाजा खटखटाते हुए उसको नहीं ढूंढ़ेंगे, क्योंकि हमें ज्ञात नहीं कि अमुक व्यक्ति किस कमरे में है , बल्कि आंगन में खड़े होकर उसके नाम को पुकारें तो वह व्यक्ति चाहे किसी भी कमरे में बैठा हो , वह कमरे से बाहर निकलकर सामने आ जाएगा, चाहे हम क्रोध से पुकारें या यूं ही आलसीपन के साथ लेकिन नामी नाम पुकारने वाले के पास आएगा जरूर, अर्थात् नाम कभी भी नामी के पास नहीं जाता है।

लेख

सेवा और भक्ति में अधिक महत्व किसका है

भक्ति और सेवा दोनों ही मोक्ष के रास्ते हैं, लेकिन यदि आप आज प्यासे रह जाते तो मेरी अब तक की सारी साधना व्यर्थ हो जाती

एक व्यक्ति ने राजा से पूछा, 'राजन, मनुष्य के जीवन में भक्ति और सेवा में किसका महत्व ज्यादा है?' उस समय वह उस प्रश्न का जवाब नहीं दे पाए। कुछ समय बाद राजा शिकार के लिए जंगल की ओर निकले। घने जंगल में वह रास्ता भटक गए। राजा किसी तरह कुटिया तक पहुंचे और 'पानी-पानी' कहते हुए मूर्छित हो गए। पानी-पानी की पुकार सुनने से संत की समाधि भंग हो गई। वह अपना आसन छोड़ राजा के पास गए और उन्हें पानी पिलाया। पानी पीकर राजा की चेतना लौट आई। राजा ने कहा, 'मुनिवर, मेरी वजह से आपके ध्यान में खलल पड़ा। मैं दोषी हूं। मुझे प्रायश्चित करना होगा।' 'राजन, आप दोषी नहीं हैं इसलिए प्रायश्चित करने का प्रश्न ही नहीं है। प्यासा पानी मांगता है और प्यास बुझानेवाला पानी देता है। आपने अपना कर्म किया है और मैंने अपना। यदि आप पानी की पुकार नहीं करते तो आपका जीवन खतरे में पड़ जाता और यदि मैं समाधि छोड़कर आपको पानी नहीं पिलाता, तब भी आपका जीवन खतरे में पड़ता। आपको पानी पिलाकर जो संतुष्टि मिल रही है वह कभी समाधि की अवस्था में नहीं मिलती। भक्ति और सेवा दोनों ही मोक्ष के रास्ते हैं, लेकिन यदि आप आज प्यासे रह जाते तो मेरी अब तक की सारी साधना व्यर्थ हो जाती।' राजा को उत्तर मिल गया कि सेवा का महत्व भक्ति से अधिक है।

लेख

ईश्वर निश्चित तौर पर बड़ा दयालु है

इस जीवन में मिल रहे दुखों से मत घबराओ और अच्छे-अच्छे काम करो।

भगवान ने हम पर बड़ी कृपा की है जो हमें यह सुंदर मानव तन दिया। मानव का जीवन दिया और मानव का उन्नत मस्तिष्क प्रयोग करने का अवसर भी दिया। परमात्मा निश्चित तौर पर दयालू है। लेकिन उनकी दयालुता का मतलब तभी सिद्ध होता जब हम इस मानव जीवन का सही उपयोग कर सकें।

मानव जन्म लेकर भी परमपिता परमात्मा श्री हरि नारायण के नाम का स्मरण नहीं किया, भगवद् चर्चा नहीं की, उसके नाम का गुणानुवाद नहीं किया, सत्संग नहीं किया और सद्कार्य नहीं किये और ऊपर से कह रहे हैं कि कोई फायदा नहीं हुआ। जो पूर्वजन्मों के प्रारब्ध हैं वे तो सबको भोगने ही पड़ेंगे और भोगने भी चाहिए। आज काट लोगे, भोग लोगे और अच्छे-अच्छे काम करोगे, भगवान के नाम का गुणानुवाद कर लोगे तो गुरुजन की कृपा से श्री हरि की शरणाई शीघ्र ही मिल जायेगी। मोक्ष की प्राप्ति हो जायेगी। जन्म मरण के चक्रों से मुक्ति हो जायेगी। नहीं तो यूं ही बार-बार जन्म ले लेकर परेशान रहोगे। इसलिये इस जीवन में मिल रहे दुखों से मत घबराओ और अच्छे-अच्छे काम करो। भगवान का धन्यवाद करो कि इतना अच्छा जीवन दिया। इसके लिए भगवान का हर क्षण धन्यवाद करना चाहिए

लेख

दिल लगाया संसार में और दिमाग लगाया भगवान में

फुर्सत कहाँ जो हम विचार करें, हम संसार में भरोसा करते हैं और प्रभु पर हमेशा शंकित रहते हैं,

भगवान ने हमें दो बहुत ही अद्भुत चीजें दी हैं एक दिल और एक दिमाग। भगवान ने कहा तुम दिल हममें लगाना और दिमाग संसार में , लेकिन हमने शुरु से ही गलती कर दी, दिल लगाया संसार में और दिमाग भगवान में। अक्सर लोग कहते मिल जायेंगे कि हमारा तो दिल ही टूट गया, हमारे घरवालों ने हमारा दिल ही तोड़ दिया, अब जरा सोचिए कि घर दिल से चलता है या दिमाग से। आज तक हमने कभी भी संसार पर कभी कोई बहस नहीं की जब भी की भगवान पर ही की, जबकि सभी सन्त आज तक यही कहते आये हैं कि संसार मिथ्या है, स्वप्न है, लेकिन हमें फुर्सत कहाँ जो हम विचार करें। लेकिन हम संसार में भरोसा करते हैं और प्रभु पर हमेशा शंकित रहते हैं, जब हम नाई के पास बाल कटवाने जाते हैं तो ये देखते हुए भी कि नाई छुरे को तेज कर रहा है हम निश्चिंत होकर आँख बंद करके बैठे रहते हैं , और जब बात भगवान की आती है तो हम कभी भी विश्वास ही नहीं कर पाते हैं, क्योंकि हम भगवान को दिमाग से सोचते हैं कि भगवान हैं भी या नहीं हैं। यही वजह है कि संसार नश्वर होते भी संसार को सिद्ध करने की इतनी पुस्तकें नहीं हैं जितने ग्रंथ भगवान को सिद्ध करने के लिए हैं। एक बार एक सज्जन गीता हाथ मे लेकर रो रहे थे, तभी दो सन्त उधर से निकले अब उन्होंने सज्जन को गीता हाथ में लेकर

रोते हुए देखा तो आपस में बोले कि देखो जिस गीता से अर्जुन रोते हुए हंसने लगे। वही गीता को हाथ में लेकर यह आदमी रो रहा है। चलो पूछते हैं कि क्या बात है। तो दूसरे सन्त ने कहा शायद इनको संस्कृत नहीं आती होगी इसलिए रो रहे हैं। दोनों सन्त पास गए और रोने का कारण पूछा कि क्या हुआ आप गीता लेकर रो क्यूँ रहे हैं। आपको संस्कृत नहीं आती या कोई श्लोक नहीं समझ पा रहे हैं। तो सज्जन बोले कि मैं ऊपर बने इस चित्र में भगवान की दशा देखकर रो रहा हूँ कि एक हाथ में लगाम है। गर्दन टेढ़ी किये हुए भगवान कब से समझा रहे हैं और अर्जुन है कि समझ नहीं रहा। भगवान की तो गर्दन भी दुखने लगी होगी सन्त बोल पड़े कि हे सज्जन वास्तविक गीता का ज्ञान तो आपको ही हुआ है। क्योंकि आपने दिल से भगवान को समझा है।

सामाजिक जीवन में सभी के लिए कुछ सीमाएं होती हैं। हर व्यक्ति को उन सीमाओं का हमेशा पालन करना चाहिए, लेकिन अहंकारी व्यक्ति की कोई सीमा नहीं होती। अंहकार में मनुष्य को अच्छे-बुरे किसी का भी होश नहीं रहता है। अहंकार के कारण इंसान कभी दूसरों की सलाह नहीं मानता, अपनी गलती स्वीकार नहीं करता और दूसरों का सम्मान नहीं करता। ऐसा व्यक्ति अपने परिवार और दोस्तों को कष्ट पहुंचाने वाला होता है।

।। श्री गुरूहरिः ।।

श्री सिद्धदाता आश्रम

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

प्रांगण में जनहित सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

नि:शुल्क विशाल चिकित्सा शिविर

प्रत्येक रविवार प्रात: नौ बजे से

उच्च प्रशिक्षित चिकित्सा विशेषज्ञों एवं उनके सहयोगियों द्वारा आयुर्वेद, अंग्रेजी, होम्योपेथी व प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों को बेहतर और निशुल्क चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं।

वैकुंठवासी गुरू महाराज की कृपा एवं अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से शिविर अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर रहे हैं। अब तक लाखों जरूरतमंद इसका लाभ उठा चुके हैं और सैकड़ों मरीज प्रतिदिन अपना इलाज कराकर लाभांवित हो रहे हैं।

लेख

सामर्थ्य के बिना अहंकार किस बात का

हम इस शरीर को चलाने वाली शक्ति को नहीं समझते और महत्व अहंकार को देते हैं।

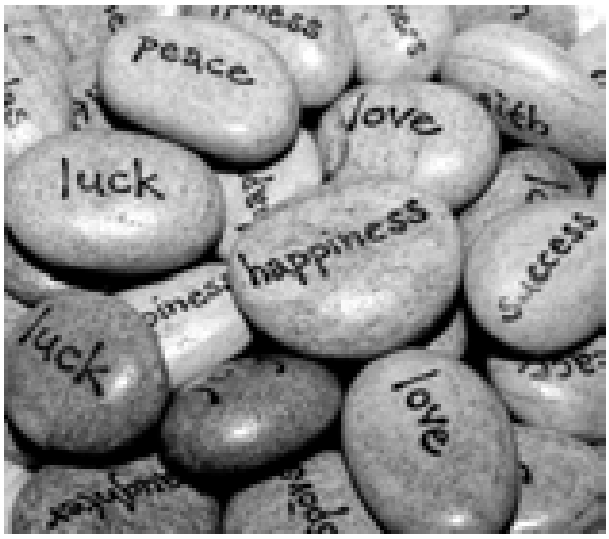

बुद्धिमान व्यक्ति पुण्य और पाप दोनों को इसी लोक में त्याग देता है यानी उनसे आजाद हो जाता है। इसलिए तुम हर हाल में एक जैसा व्यवहार करने वाले योग में लग जाओ। यह अभ्यास ही तुम्हें कर्म के बंधन से बाहर निकलने का उपाय देगा। जब कोई व्यक्ति कर्म करता है तो उस कर्म का फल मिलता है। अच्छे काम पुण्य व बुरे काम पाप फल देते हैं। हम एक दिन में ही कई काम कर लेते हैं। ये ढेरों कर्म हमारे मन-मस्तिष्क में जमा रहते हैं। कर्मों के फल से बचने के लिए हमेशा एक जैसा बर्ताव करने के भाव में आना ही समाधान देगा। इसके जरिए ही हम पाप-पुण्य दोनों से ऊपर उठ सकेंगे।

वैसे तो कर्म हमारे द्वारा होते हैं लेकिन वास्तव में इसे हम नहीं करते। हमारे भीतर मौजूद सामर्थ्य से ही कोई काम होता है लेकिन अहंकार सोचता है कि कर्म हम कर रहे हैं। हकीकत में सामर्थ्य के बिना अहंकार किसी काम का नहीं। हम इस शरीर को चलाने वाली शक्ति को नहीं समझते और महत्व अहंकार को देते हैं। यही कारण है कि हर कर्म का फल हमें मिलता है। देखा जाए तो हम सोने-जागने, खाने-पीने, नहाने, दांत साफ करने जैसे काम अहंकार भाव से नहीं करते। यही कारण है कि यह काम हमारे मन-मस्तिष्क में जमा नहीं होते। ऐसे ही आम जनजीवन में भी कामों को बिना उनसे बंध कर कुशलता से करने की कोशिश करनी चाहिए।

लेख

अशोक के पेड़ का शुभ फल

अशोक के वृक्ष के नीचे घी एवं कपूर मिश्रित दीपक जलाने से घर में नकारात्मक ऊर्जा प्रवेश नहीं करती है।

अशोक का वृक्ष हिन्दू समाज में काफी लोकप्रिय एवं लाभकारी है। अशोक का शब्दिक अर्थ है,किसी प्रकार का शोक न होना। अशोक का पेड़ जिस स्थान पर होता है। वहां पर किसी प्रकार शोक व अशान्ति नहीं रहती है। मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों में अशोक के पत्तों का प्रयोग किया जाता है। इस वृक्ष पर प्राकृतिक शक्तियों का विशेष प्रभाव रहता है। जिस कारण यह वृक्ष जिस जगह पर लगा होता है। वहां पर सभी कार्य पूर्णत: निर्बाध रूप से सम्पन्न होते हैं। इसी कारण अशोक वृक्ष भारतीय समाज में काफी प्रासंगिक है। किसी भी शुद्ध मुर्हूत में अशोक वृक्ष की जड़ को निकाल लें। जड़ को निकाल उसे स्वच्छ जल अथवा गंगा जल से शुद्ध करके। अपने पूजा के स्थल में मां दुर्गा के मन्त्र से 108 बार जाप करें। इसके बाद इस मूल जड़ को लाल कपड़े या लाल धागे में शरीर पर धारण करने से कार्यों में शीघ्र ही सफलता मिलने लगती है। अशोक के पेड़ पर यदि प्रतिदिन जल चढ़ाया जाये तो उस गृह में मां भगवती कृपा विद्यमान रहती है। उस मकान में रोग, शोक, गृह कलेश अशान्ति आदि समस्यायें न के बराबर रहती है। इस पेड़ पर जो जातक नित्य जल अर्पित करता है। उस पर मां लक्ष्मी की कृपा बरसती है। प्रत्येक शुक्रवार को अशोक के वृक्ष के नीचे घी एवं कपूर मिश्रित दीपक जलाने से घर में नकारात्मक ऊर्जा प्रवेश नहीं करती है।

लेख

दुर्जन व्यक्ति से सांप अच्छा

डी सी तंवर

...और यहां आपके शहर में व्यवसाय के साथ-साथ बसना भी चाहता है। परन्तु वहां के लोग बहुत ही अच्छे एवं

जिंदगी में अच्छी संतान, पत्नि व पति एवम् सम्पति, सफलता, स्वस्थ जीवन तथा सुन्दरता, पिछले जन्मों में सत् कर्मों से कमाए हुए पुण्य द्वारा प्राणी को जन्म के समय ही प्रारब्ध के रूप में मिलती है। वही पुत्र है जो पितृ-भक्त है, वही पिता है जो ठीक से अपने बच्चों का पालन पोषण करता है, वही मित्र है जिस पर विश्वास किया जा सके और वही देश है जहां जीविका उपलब्ध है।

वह सब कुछ पुराने जन्म जन्मांतर के संचित कर्मों से ही संभव है। पिछले जन्मों के कमाए हुए पुण्यों द्वारा संचित कर्म, इस जन्म में प्राणी प्रारब्ध लेकर जन्म के साथ ही लेता है। यदि वह प्राण इस जन्म में भी अच्छे कर्म करता रहे और धर्म के मार्ग पर चलकर पुण्यों में बढ़त करता रहे, तो भाग्य में वृद्धि अपने आप ही होती चली जायेगी।

परन्तु यदि वह प्राणी दुष्कर्मों में संलग्न रहेगा तो पाप स्वत: ही बढेंगे और यहां तक कि पिछले जन्मों में कमाए हुए पुण्य भी अपने आप क्षीण होते जाऐंगे और अंत में वह प्राणी अधोगति को प्राप्त होगा इसमें कोई संशय नहीं है।

यदि हम चाहते हैं कि हमारा यह लोक एवं परलोक सुखमय रहे तो हमें पूरे दिन में कम से कम एक पुण्य का कार्य तो

अवश्य ही पूरा करना चाहिए। साधु-संत एवं महात्माओं का एक ही मत है कि इस जिन्दगी में हर प्रकार के सुख सम्पति व समृद्धि पुण्य की कमाई से ही आती है।

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम।
परोपकारः पुण्याय, पापाय पर पीड़नम्।।

अठारह पुराणों में श्री व्यास जी के दो वचन प्रमुख हैं। परोपकार के कार्य करने से पुण्य होता है और दूसरों को पीड़ा देने से पाप होता है।

इस भौतिकवाद के जीवन में अड़चन व परेशानी न आए, यह कैसे सम्भव है। सप्ताह में एक दिन रविवार तो आएगा ही। प्रकृति का नियम ही ऐसा है कि जिंदगी में जितना सुख व दुख मिलना है, वह तो मिलना ही है और वह मिलेगा भी क्यों नहीं, टैंडर में जो भी रेट भरोगे, वह ही तो खुलेगा।

''दुख आया है सुख देने को,
मन मूर्ख क्यों घबराता है।
जब जोर से गर्मी पड़ती है, तो
बादल मेह बरसाता है।।''

मीठे के साथ नमकीन भी जरूरी है और सुख के साथ दुख का होना भी लाजमी है। वैसे दुख भी बड़े काम की चीज है, क्योंकि यदि जिंदगी में देख आए ही न, तो भगवान को कौन याद करे।

''दुख में स्मरण सब करें, सुख में करे ना कोय।
जो सुख में स्मरण करें तो दुख काहे को होय।।''

इस संसार में रहते हुए दो चीजों को कभी भी नहीं भूलना चाहिए। एक तो परमात्मा और दूसरी मौत।

''दो बातन को याद रख, जो चाहे कल्याण।
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान्।।''

मानव को धनाठ्य व शक्तिशाली होते हुए भी, मानव को सदा याद रखते हुए उसके अनुसार ही आचरण करना चाहिए।

जफ़र उसे इंसान न समझ जिसे ऐश में यादे खुदा न रही।
और तेरा में खौफे खुदा न रही।

भूलने वाली भी दो बातें हैं। यदि हमने किसी का भला किया है तो उसे तुरंत ही भूल जाना चाहिए। दूसरे हमारे साथ कभी किसी ने बुरा किया हो तो उसे भी भूलने का प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु यह बहुत ही कठिन कार्य है, जिससे बिरले ही पार होते हैं। फलदार वृक्ष और गुणवान मनुष्य झुकते हैं, लेकिन सूखी लकड़ी और मूर्ख व्यक्ति कभी नहीं झुकते, बल्कि ऐंठते और हैं।

कर्म बड़ा या भाग्य

इस दुनिया में कर्म को मानने वाले लोग कहते हैं कि भाग्य कुछ नहीं होता और आशावादी लोग कहते हैं, कि किस्मत में जो लिखा है, वही होकर रहेगा। यानी इंसान कर्म व भाग्य इन दो बिंदुओं की धुरी पर घूमता रहता है और एक दिन इस संसार को अलविदा कहकर चला जाता है। तथा जाते समय कहता है-

हम भी गलती करेंगे जिन्दगी में एक बार।
लोग पैदल चल रहे होंगे और हम कंधे पर सवार।।

कर्म फल

भाग्य और कर्म को भली प्रकार से समझने के लिए पुराणों में एक कहानी का उल्लेख मिलता है। एक बार देवर्षि नारद जी बैकुण्ठधाम गए। वहां उन्होंने भगवान विष्णु को नमन किया और श्री हरि जी से कहा, भगवान् पृथ्वी पर अब आपका प्रभाव हो रहा है। क्रमशः

।। श्री गुरूहरिः ।।

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज की कृपा से स्थापित व प्रकाशित एवं अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के नेतृत्व में प्रकाशित मासिक पत्रिका श्री सुदर्शन संदेश के प्रचार प्रसार के लिए प्रण लें। - संपादक

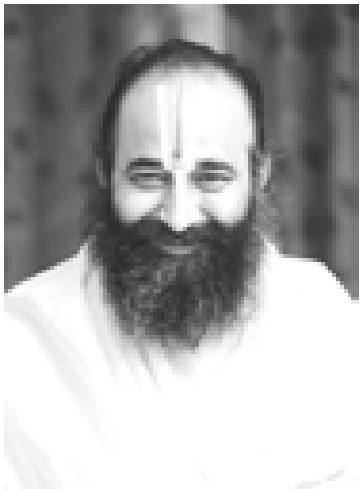

आपको क्या होगा लाभ!

पहले यह जान लें कि पत्रिका की सदस्यता एवं प्रचार प्रसार के मायने क्या हैं वास्तव में ''गुरुवचनों का प्रचार'' अर्थात् गुरू की ही सेवा है। गुरू महाराज के वचनों के अनुसार शास्त्र कहते हैं– जो शिष्य गुरु के वचनों का प्रचार प्रसार करता है, उनको अंगीकार करता है वास्तव में वह गुरू की सीधी कृपा का पात्र बनता है।

गुरू के वचनों को पढ़ने पढ़ाने से आपको अपने जीवन का सही अर्थ पता चलेगा। आपको निरंतर सत्संग मिलेगा। आपको सही और गलत में अंतर करने की बुद्धि मिलेगी। आप अपने धार्मिक कर्म, पर्व, त्यौहार, पित्रों को प्रसन्न करने, घर परिवार में कैसे रहें आदि आदि जानकारियों को समझ सकेंगे। इसके साथ ही आप गुरू वचनों को हृदय में धारण करेंगे।

आपसे प्रार्थना है कि श्री सुदर्शन संदेश पत्रिका के सदस्य बनें व बनाएं। श्री गुरू महाराज की कृपाओं को प्राप्त करें।

लेख

देवों के देव महादेव और सावन का महत्व

सावन माह में मंगलवार को किए जाने वाले व्रत को मंगला गौरी व्रत कहा जाता है। इसे सुहाग के बहुत ही शुभ व्रत माना गया है।

पुराणों के अनुसार, अन्य दिनों के अपेक्षा सावन के महीन में शिव की पूजा और अभिषेक करने से जल्दी और कई गुणा अधिक लाभ मिलता है। शिव के रूद्र रूप को उग्र माना जाता है लेकिन प्रसन्न होने पर ये तीनों लोकों के सुखों को भक्तों के लिए सुलभ कर देते हैं। सावन के महीने में रूद्र ही सृष्टि के संचालन का कार्य देखते हैं।

इस साल सावन के महीने में रोटक व्रत लग रहा है। शास्त्रों के अनुसार जिस साल सावन में 5 सोमवार होते हैं उस साल यह व्रत लगता है। इस व्रत के विषय में मान्यता है कि जो भक्त रोटक व्रत पूरा करता है यानी पांचों सोमवार के व्रत रखता है, भगवान शिव और माता पार्वती उनकी सभी इच्छाएं पूरी करते हैं। शिवपुराण के अनुसार, भगवान शिव ने माता पार्वती की तपस्या से प्रसन्न होकर सावन के महीने में ही उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार करने का वरदान दिया था। साथ-साथ उन्होंने यह भी कहा था कि जो भी भक्त सावन में मेरी पूजा करेगा उनकी सभी मनोकामनाएं मैं पूरी करूंगा। सावन महीने के सभी मंगलवार के व्रत माता पार्वती के लिए किए जाते हैं, जो भगवान शिव की अर्धांगिनी हैं। सावन माह में मंगलवार को किए जाने वाले व्रत को मंगला गौरी व्रत कहा जाता है। इसे सुहाग के बहुत ही शुभ व्रत माना गया है।

प्यार करने वाला उसका मूल्य नहीं चाहता

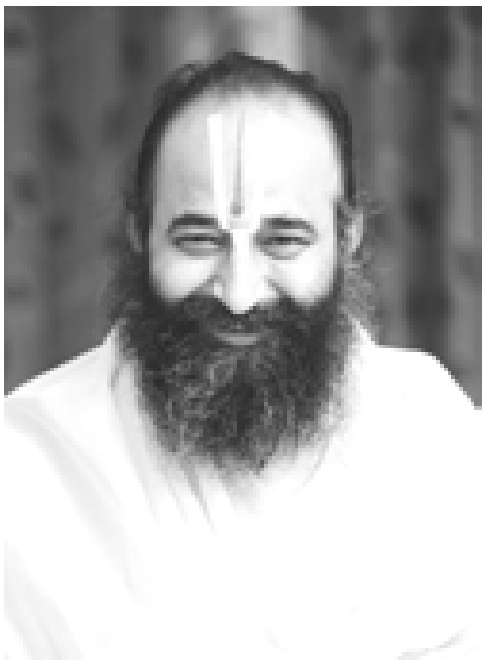

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, *पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम*

हम कहते हैं कि हे भगवान्! हम तुम्हें मानते हैं। गुरूजी! तुमको हम मानते हैं। पर मानने से पूर्व एक-एक हजार कामनायें भी आप पेश करते है। हमने प्यार कामना से किया है, भगवान से नहीं किया। हमने तो प्यार स्वार्थ से किया है। हम तो सौदागर हैं कि यह ले ले और वह दे दे। उस प्यार का आनन्द आप लोग नहीं ले पायेंगे और न मैं ले पाऊंगा। आनन्द तो वहीं है जहां स्वार्थ नहीं है। वह योग्य है, बलिष्ठ है, समदर्शी है और हर प्रकार से शक्तिशाली है, वह स्वयं तुम्हारे प्यार की कीमत को कभी गलत नहीं होने देगा।

क्या भगवान् कृष्ण ने प्यार का मूल्य गोपिकाओं को नहीं चुकाया? केवल उन्हें आनन्दित ही नहीं रखा बल्कि उनको अपना दिव्य लोक भी दिया।

उस परमात्मा से प्यार किया हुआ कभी व्यर्थ नहीं जाता। पर हम तो शीशे के बदले कोहिनूर हीरे को गंवा देते हैं।

जो सांसारिक, सामाजिक सुख है, विलासता है, यह शीशा है। ओस की बूंद है, ओस की बूंद को देख कर, हम घड़े को

फोड़ देते हैं। घट क्या है? शरीर। और इसके अन्दर जल क्या है? उस परमात्मा का प्यार रूपी जल भरा हुआ है, तरंगें ले रहा है, लहरें ले रहा है, शान्ति ले रहा है। पर हम उस शान्ति के लिए, उस लहर के लिये काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ के द्वारा उस घड़े को फोड़ देते हैं। आप प्रातः काल बाग बगीचे में जाते हैं तो वहां ओस की कितनी सुन्दर बूंदें होती हैं जो हरी, पीली, अनेकानेक भान्ति के रंगों में परिणीत होती रहती हैं। बहुत खूबसूरत होती हैं। उस खूबसूरती को देखकर पुराना घड़ा फोड़ दिया हमने और उन बूंदों के पीछे गये।

हम उस परमात्मा से प्यार करें जो टिकाऊ है और वह खुद हमको दे देगा। क्या अपने बेटे-बेटी को मां-बाप दुःख देते हैं? अरे, वह चोरी करके भी, भीख मांग कर के भी, पड़ोसी से झूठ बोलकर के भी, अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं। उनकी आवश्यकता की वस्तु लाते हैं। तो क्या परमपिता परमात्मा हमको दुःख देगा?

प्यार की परिभाषा के लिये महात्मा बुद्ध अपने शिष्य से कहने लगे कि हे बेटे! जहां पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, मात्सर्य आदि-आदि हैं, जहां कामनायें होती हैं, छिद्र होते हैं, उन छिद्रों के कारण पानी से तृप्ति नहीं होती अर्थात् इन छिद्रों को बन्द करना ही पड़ेगा।

प्यार करने वाला उसका मूल्य नहीं चाहता। प्यार करने वाला कभी दिखावा नहीं करता। प्यार करने वाला कभी सम्मान की इच्छा नहीं करता। प्यार करने वाला कभी पुजवाने की इच्छा नहीं करता। वह इच्छा रहित होता है। वह एक तरफा प्यार करता है। एक भक्त भगवान् से कहता है, ''मैं तुझे चाहूं तो चाहूं, पर तू मुझे चाहना नहीं।'' भगवान् बोले कि बेवकूफ, इतने दिन भजन करके क्या तू यही मांग रहा है? भक्त बोला, मैं बेवकूफ ही ठीक हूं, यही मांगूंगा। बोले, क्यूं? क्योंकि तेरे प्यार के सरूर का गरूर हो जायेगा मुझे। तेरे प्यार का जब सरूर चढ़ेगा मुझे, तो मुझे गरूर हो जायेगा कि मैं भक्त हूं, मैं आचार्य हूं, मैं जगद्गुरु हूं, मैं जगद्गुरु रामानुजाचार्य हूं, मैं स्वर्ण के सिंहासन पर बैठा हूं, मैं प्रवचन कर रहा हूं, मैं मांगू तो मांगू, पर तू मुझे देना नहीं। मुझे मांगने की आदत है। मैं मांगूंगा पर तू मुझे मना कर देना। क्यों? इसलिए कि लोग मुझे तेरे दर का भिखारी कहने लगेंगे। मुझे प्यारा नहीं कहेंगे, मुझे प्यार करने वाला नहीं कहेंगे। अगर मैंने प्यार की कीमत ले ली तो मेरा किस बात का प्यार है? हम कीमत का पहले ही मूल्यांकन कर लेते हैं। तुमने पहले ही उससे छोटी शर्तें कर लीं। पहले ही कार्बन ले आये। पता नहीं वह क्या-क्या दे दे। तुम गाड़ी की बात करते हो, वह तुम्हें वायुयान दे दे। तुम एक लाख की लाटरी की बात करते हो; तुम्हें जगतपति बना दे, तुम्हें यहां का राजा बना दे, मन्त्री बना दे, क्या पता है उसका।

प्यार की कीमत नहीं होती और प्यार का मोल नहीं होता। आजकल भी अगर कोई प्यार में मगन होता है, चाहे भौतिकवाद के, चमड़ी-दमड़ी के प्यार में हो, चाहे भगवान् के प्यार में हो, चाहे गुरु के प्यार में हो, जब प्यार में मदोन्मत्त होता है तो संसार गाली दे कर हंसता है। फलां आदमी तो

बेवकूफ का बच्चा है, पागल हो गया है, काम धाम छोड़ दिया है, काम पर ध्यान नहीं देता, घर पर ध्यान नहीं देता और उस बाबा जी के चक्कर में पड़ गया है। बाबा जी ने कोई ऐसी चड़ी पिला दी उसको कि वह तो पागल हो गया या हो गई। तो शुरू से, सतयुग से ले कर आज तक प्यार करने वालों पर कीचड़ उछालने वालों की कमी नहीं रही। मीरा को भी लोगों ने नहीं बख्शा। गोपिकाओं को नहीं बख्शा। जिन्होंने प्यार किया है उनका संसार में निरादर और तिरस्कार किया गया है। लेकिन यह बात भी उतनी ही पुरानी और सत्य है कि संसार मुझे कुछ नहीं देगा, संसार से मैं भौतिकवाद का सुख प्राप्त कर सकता हूं या कर सकती हूं, पर वह परम सुख को देने वाला कोई और है। उससे प्यार करने में दुनिया हंसे तो हंसे, उसका नाम है प्यार। जब ऐसा प्यार हृदय में फूट निकलता है तो वह भगवान्, वह गुरु, वह सन्त एक क्षण मात्र की भी देरी नहीं करता, बिक जाता है। यह प्यार की परिभाषा हमारे अन्दर आनी चाहिये।

प्यार करने वाला कभी अपना निरादर, कभी अपना आदर, कभी अपनी प्रतिष्ठा, कभी अपनी अप्रतिष्ठा को स्वीकार नहीं करता। वह समदर्शी रहता है। अपनी संस्था में ही मैं देखता हूं कि कई ऐसे भद्रपुरुष हैं, जिनका थोड़ा सा अपमान हो जाये या उनसे थोड़ा सा कोई कुछ बोल जाये या व्यवस्था को बनाये रखने के लिये कुछ कह दे, तो वे आना ही छोड़ देते हैं। वे यहां से सम्बन्ध ही तोड़ लेते हैं। यहां पर आना ही स्वीकार नहीं करते। पर उन लोगों का दुर्भाग्य है। वे मन्दबुद्धि हैं। उनके भाग्य में कठोर दु:ख लिखा हुआ है।

जिनको इस आश्रम से प्यार है, उसके लिये कोई निरादर करे तो करे। उसका प्यार, उसका निरादर करने वाले से तो नहीं है। उसका प्यार अपनी जगह से है, उसको प्यार अपने गुरु से है और वह आश्रम और गुरु भी यदि निरादर करें तो लाख बार करते रहें, पर उसका भाव तो यही होना चाहिये कि मुझे तुझ से प्यार है, तू मुझ से प्यार करे या न करे, यह तेरी मर्जी की बात है।

एक दोस्त ने दूसरे दोस्त से पूछा कि तुम मुझे कितना चाहते हो। तो दूसरे ने बड़ा साधारण सा जवाब दिया–

मेरे दिल में तो तू ही बसा है।
पर तेरे दिल की जाने विधाता।।

हे भगवान् तेरे मन की बात को तू जाने। मेरे दिल में तो तू ही बसा हुआ है। इसका नाम है प्यार। इस जगह से, उस परमात्मा से, उस परमात्मा की आज्ञा से मुझे प्यार है।

समाज में मैंने देखा है कि थोड़े से शब्द कडुवे बोलने से, थोड़े से शब्द उनके कहे हुए मार्ग पर न चलने से, वे आना ही छोड़ देते हैं। किसी की कामना की पूर्ति में थोड़ी कमी-बेशी हो गई, तो आना ही छोड़ देते हैं। ऐसे व्यक्ति प्यार करना नहीं जानते, उनका दुर्भाग्य ही है। भाग्यशाली जीव वही है कि तू मुझे भूखा रखे, चाहे नंगा रखे, तेरी मर्जी, पर मैं तेरा हूं। भाग्यशाली बाबा नानक देव जी थे। उन्होंने कहा–

पाणी ढोआं, पंखा झलां,
दे दे सोई सोई खावां।।

मैं पानी ढोता रहूंगा, तेरा पंखा

झलता रहूंगा और जो तू दे देगा, सोई सोई खा लूंगा। नहीं देगा तो आनन्द मनाऊंगा, जय जय हरि पुकारूंगा। इसका नाम है प्यार। ऐसा प्यार आप हम करें तो मेरे प्रेमियो, वह भगवान् लेशमात्र हम से दूर नहीं।

लोग कहते हैं कि भगवान को हम मथुरा में ढूंढ़ने जा रहे हैं, वृन्दावन में ढूंढ़ने जा रहे हैं, काशी जा रहे हैं। वह भगवान् काशी का ही नहीं है, वह वृन्दावन का ही वासी नहीं है। उसका नाम अणु-अणु, कण-कण, जर्रे-जर्रे में समाया हुआ है। उस परमात्मा का नाम समदर्शी है। उस परमात्मा का नाम समप्राप्ति है अर्थात् सब में समाहित है। वह सब जगह पर है। क्या वृन्दावन में ही मिलेगा वह? अगर वृन्दावन में ही मिलने लगे तो मेरे प्रेमियो! वृन्दावन में भीड़ की वजह से रोज-रोज लोग मरना शुरू हो जायें। ऐसा है नहीं। मीरा जहां भी रहती थी, कृष्ण वहां मौजूद थे। प्रह्लाद ने जब पुकारा, खम्भ को फाड़ करके, नरसिंह रूप धारण करके, उसकी रक्षा की। क्या वह खम्भ में नहीं था? वह भगवान सर्वव्यापी है। वह एक देशीय नहीं; एक क्षेत्रीय नहीं; वह सर्वव्यापी हैं और सर्वव्यापी को ढूंढने की जरूरत नहीं होती। केवल उससे प्यार करने की जरूरत होती है। प्यार करने पर वह स्वयं साकार रूप धारण करके गले से लगा लेता है।

प्रह्लाद को देखा तो नरसिंह की आंखों में आंसू थे कि बेटे! मैं बहुत देर से आया। हे मेरे बेटे प्रह्लाद! मुझे माफ कर देना, मैं लेट हो गया। तूने इतनी देर कष्ट सहन किये, उसके लिये मुझे माफ कर देना, मुझे क्षमा कर देना और रुद्न करने लग गये। कितना विचित्र खेल उस भगवान् का है! नरसी के लिये भात देने में थोड़ी देर हो गई तो रुकमणि को ले गये; सत्यभामा को ले गये। हे मेरे नरसी सेठ! मुझे माफ कर देना, मैं तुम्हारा मुनीम हूं; मैं कुछ काम में लगा था, देरी से आया और यह छप्पन करोड़ की जो माया मैंने यहां दी है, यह तेरे ब्याज का ब्याज है। अभी तेरा मूलधन व ब्याज तो मेरे पास जमा है। कितने दयालु भगवान हैं और कितना लम्बा-चौड़ा ब्याज है उनका! देखिये। पर हम तो उस ब्याज को लेना ही नहीं जानते। जमा कराना ही नहीं जानते। जमा कराने से पहले ही निकाल लेते हैं। एडवांस (अग्रिम राशि) ले लेते हैं। और एडवांस लेने के बाद वापिस करने का नाम नहीं लेते। कई प्रेमी तो ऐसे होते हैं कि कई जगहों को मानने के बाद, उनको पूरा नहीं करते। एडवांस तो ले ही लिया, अब तू लेगा क्या हमसे? आगे चल के दूसरा दर है, उससे ले लेंगे। हमारी मानवता का यह व्यवहार हो गया है और फिर कहते हैं कि परमात्मा नहीं मिलता।

मैं इतना ही कहूंगा कि मानव जीवन के लिये प्यार करना बहुत जरूरी है। निर्मल प्यार।

निर्मल प्यार उसे कहते हैं, जिससे सतोगुण, रजोगुण व तमोगुण, तीनों ही गुण न हों। अर्थात् प्यार थोड़ी देर के लिये कर लोगे तो हमेशा के लिये भगवान को खरीद लोगे।

लेख

दूसरों के पीछे भागने से मंजिल नहीं मिलती

दूसरे लोगों के पीछे भागते रहते हो। रास्ता उतना ही तय होता है पर तुम बुरी तरह थक जाते हो।

गुरू जी से मिलने एक व्यक्ति आया। गुरू जी को देखते ही वह उनके पैरों पर गिर गया कहने लगा, 'गुरू जी! मैं मेहनत में कोई कमी नहीं छोड़ता, इसके बावजूद कभी भी सफल नहीं हो पाया।' उन्होंने अपना छोटा-सा पालतू कुत्ता उस व्यक्ति को सौंपा और कहा, 'तुम कुछ दूर मेरे इस कुत्ते को सैर करा लाओ फिर मैं तुम्हारे सवालों के जवाब दूंगा।' बाद में जब वह कुत्ते को लेकर गुरू जी के पास लौटा तो उसके चेहरे पर थकान के कोई निशान नहीं थे। मगर कुत्ता बुरी तरह से हांफ रहा था और थका हुआ लग रहा था। गुरू जी ने उस व्यक्ति से पूछा, 'यह कुत्ता इतना हांफ क्यों रहा है? जबकि तुम पहले की तरह ही ताजा और साफ-सुथरे दिख रहे हो?' उस व्यक्ति ने जवाब दिया, 'गुरू जी! मैं तो सीधा-सीधा अपने रास्ते पर चल रहा था, पर यह कुत्ता तो दौड़ता ही रहा। यह गली के सभी कुत्तों के पीछे भागता और उनसे लड़कर फिर मेरे पास वापस आ जाता। इसने मेरे से कहीं ज्यादा दौड़ लगाई है, इसीलिए यह ज्यादा थक गया है।' गुरू जी मुस्कराए, और कहा, 'यही तुम्हारे प्रश्नों का जवाब है। तुम मंजिल पर सीधे जाने के बजाय दूसरे लोगों के पीछे भागते रहते हो। उसमें तुम्हारी काफी ऊर्जा लगती है। रास्ता उतना ही तय होता है पर तुम बुरी तरह थक जाते हो।'

लेख

गुरूवर को साष्टांग प्रणाम करने में छुपा स्वास्थ्य

दंडवत का एक वैज्ञानिक पहलू भी है, जिसे मनीषी जानते थे।

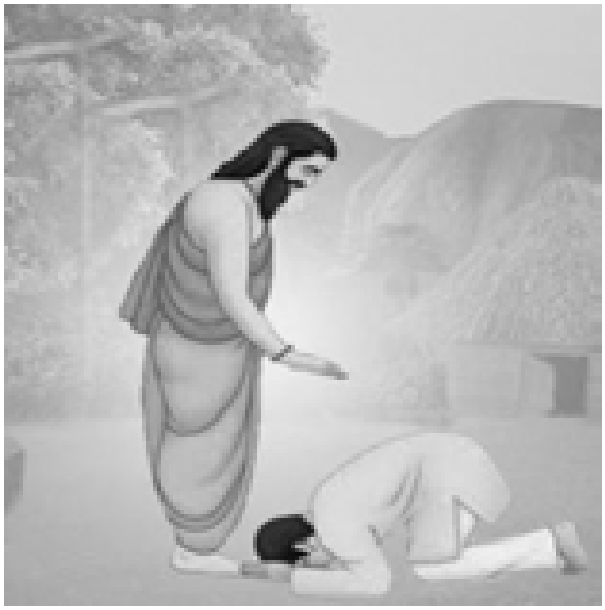

आजकल के इस मॉडर्न ज़माने में नमस्कार करना या फिर किसी को झुककर चरण स्पर्श करना तो जैसे हमारी नयी पीढ़ी के लिए बस औपचारिकता मात्र ही रह गयी है लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो इस ज़माने में भी नमस्कार करने को किसी का सम्मान करना मानते हैं। इन्हीं में से कुछ लोग साष्टांग दंडवत प्रणाम को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। साष्टांग नमस्कार भी नमस्कार का ही एक रूप है जिसमें शरीर के सभी अंग ज़मीन को छूते हैं। आमतौर पर इस नमस्कार को दण्डकार नमस्कार और उद्दंड नमस्कार भी कहा जाता है। यहां दंड का अर्थ होता है डंडा इसलिए इस प्रणाम को करने के लिए व्यक्ति ज़मीन पर बिल्कुल डंडे के समान लेट जाता है। ऐसी मुद्रा के पीछे का मतलब होता है कि जिस प्रकार ज़मीन पर गिरा हुआ डंडा बिल्कुल अकेला और मजबूर होता है वैसे ही मनुष्य भी दुखी और लाचार है। इस वजह से ही वह भगवान की शरण में आया है और उनसे मदद के लिए प्रार्थना कर रहा है। ऐसे नमस्कार करके वह ईश्वर तक अपनी बात पहुंचाने की कोशिश करता है। कुछ मायनों में इस नमस्कार का मतलब होता है अपने अहंकार का त्याग करना। कहते हैं जब हम खड़े होकर ज़मीन पर गिर जाते हैं तब हमें चोट लगती है, ठीक वैसे ही बैठे बैठे भी गिरने पर हम चोटिल हो जाते है किन्तु साष्टांग नमस्कार में गिरने और चोट लगने की कोई गुंजाइश नहीं होती। साष्टांग

नमस्कार से मनुष्य के अंदर विनम्रता के भाव आते हैं। जब कोई दूसरा हमारा सिर झुकाता है तो इससे हमारा अपमान होता है किन्तु जब हम स्वयं अपना सिर झुकाते हैं तो वह हमारे लिए सम्मान की बात होती है। हिंदू धर्म में नमस्कार हिंदू धर्म में नमस्कार का बड़ा ही महत्व होता है। हम अकसर अपने से बड़ों या फिर किसी संत पुरुष के आगे झुककर उन्हें नमस्कार करते हैं। हिंदू धर्म में नमस्कार करना यानी सम्मान देना होता है। जब हम किसी के आगे अपना सिर झुकाते हैं तो वह इंसान हमारा आभार स्वीकार करता है और ईश्वर से हमारे लिए सुख और समृद्धि की कामना करता है। कैसे करते है साष्टांग नमस्कार साष्टांग नमस्कार में आपके शरीर के आठ अंग ज़मीन को टच करते हैं। वो आठ अंग होते हैं छाती, सिर, हाथ, पैर के पंजे, घुटने, शरीर, दिमाग और वचन। आमतौर पर यह नमस्कार पुरुष ही करते हैं। सबसे पहले दोनों हाथ छाती से जोड़कर कमर से झुके फिर पेट के बल लेटकर दोनों हाथ ज़मीन पर टिकाएं। उसके बाद पहले दायां फिर बायां पैर पीछे की ओर ले जाकर तानकर बिल्कुल सीधे लेट जाएं। आप ऐसे लेटें कि आपकी छाती, हथेलियां, घुटने और पैरों की उंगलियाँ ज़मीन पर टिक जाएं। अब दोनों आँखें बंद कर लें और सच्चे मन से ईश्वर को याद करें। क्या औरतें साष्टांग नमस्कार कर सकती हैं? शास्त्रों के अनुसार औरतों को यह नमस्कार करने की मनाही होती है क्योंकि इस मुद्रा में उनके स्तन और गर्भाशय ज़मीन को छूते हैं। ज़ाहिर है महिलाएं बच्चे को स्तनपान कराती है और उनके गर्भ में नया जीवन पलता है इसलिए इनके इन अंगो को ज़मीन पर स्पर्श नहीं कराना चाहिए। ऐसे में महिलाएं पंचांग नमस्कार कर सकती हैं। इस नमस्कार में स्त्रियों को अपनी हथेलियों के साथ-साथ घुटनों को भी ज़मीन से छूना पड़ता है। साष्टांग प्रणाम करने के स्वास्थ्य लाभ साष्टांग नमस्कार केवल ईश्वर की शरण में जाकर उन्हें याद करना ही नहीं होता बल्कि इसके कई स्वास्थ्य लाभ भी होते हैं। जी हाँ, इस नमस्कार से हमारे स्पाइन में लचीलापन और सुधार आता है। इससे मांसपेशियां पूरी तरह से खुल जाती हैं साथ ही पैरों, कन्धों और माँसपेशियों में मज़बूती भी आती है। इस मुद्रा से मनुष्य के अंदर सकारात्मकता आती है और उसके अहंकार का भी नाश हो जाता है। इतना ही नहीं वह खुद को ज़मीन से जुड़ा हुआ भी महसूस करने लगता है।

यदि कोई व्यक्ति मूर्ख है और वह कुछ कह रहा है तो उसे तुरंत मान लें, अन्यथा वह आपका समय बर्बाद करेगा। बेकार के तर्क-वितर्क करेगा और इन बातों को सुनने से आपको कोई फायदा नहीं होगा। इसलिए मूर्ख व्यक्ति की बात तुरंत मान लेनी चाहिए।

भिंडी में छुपे हैं सेहत के लाखों गुण

अनुलोम-विलोम धीरे-धीरे एवं कम से कम सौ बार अवश्य करें। इससे लाभ जल्दी होने लगता है।

भिंडी में विटामिन और खनिजों सहित विटामिन ए, बी, सी, ई और के और कैल्शियम, लोहा और जस्ता आदि पाया जाता है। इसके अलावा, भिंडी में उच्च स्तर का लसदार फाइबर भी होता है। डायबिटीज के रोगियों को अक्सर भिंडी की अधकच्ची सब्जी खानी चाहिए। भिंडी के बीजों का चूर्ण (5 ग्राम), इलायची (5 ग्राम), दालचीनी की छाल का चूर्ण (3 ग्राम) और काली मिर्च (5 दाने) लेकर अच्छी तरह से कूट ले। इस मिश्रण को रोजाना दिन में 3 बार गुनगुने पानी में मिलाकर लें। डायबिटीज में तेजी से फायदा होता है। भिंडी के कटे हुए सिरों को पीने के पानी में डुबो कर सारी रात रखा जाता है। सुबह खाली पेट इस पानी को पी लिया जाता है। छानने के बाद बचे भिंडी के हिस्सों को फेंक दिया जाना चाहिए। माना जाता है कि डायबिटीज नियंत्रण के लिए यह एक कारगर उपाय है। भिंडी के बीजों को एकत्रित कर लें। इन्हें सुखाकर पीस लें। ये बीज प्रोटीनयुक्त होते हैं और उत्तम स्वास्थ्य के लिए बेहतर हैं। इस चूर्ण को बच्चों को खिलाने पर ये टॉनिक की तरह काम करेगा। मध्य प्रदेश के पातालकोट के भुमका (हर्बल जानकार) नपुंसकता दूर करने के लिए पुरुषों को कच्ची भिंडी को चबाने की सलाह देते हैं। ये आदिवासी शारीरिक कमजोरी दूर करने के लिए भिंडी को बेहतर मानते हैं।

दृढ़ता ही परमात्मा प्राप्ति का मूल साधन है

वैकुंठवासी जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

दृढ़ता ही परमात्मा की प्राप्ति का मूल साधन है। अगर दृढ़ता नहीं रही तो परमात्मा की प्राप्ति भी नहीं हो सकती। दृढ़ता का प्रत्यक्ष अनुभव हम व्रत से कर सकते हैं, महादेव का, देवी मय्या का, हनुमान जी बाबा का, राम जी का, कृष्ण जी, शिवजी, किसी का भी। बाबा हनुमान जी का व्रत ले लिया। व्रत में दृढ़ता है हनुमान जी के प्रति। हम दिन में तीन बार खाते हैं, चार बार खाते हैं। पर उस दिन भूख नहीं लगती। यदि हमसे कोई कहे कि आज तो हमारे यहां इमरती आई हुई हैं, आप स्वल्पाहार कर लीजिये। तो यही कहेंगे कि नहीं महाराज! आज तो हमारा मंगलवार का व्रत है। इमरती से ऊपर भी यदि कोई और मिठाई हो तो तब भी नहीं खाते और भूख भी नहीं लगती। ये बहन बेटियां या बहुत से मेरे भाई भी व्रत करते हैं। ज्येष्ठ के महीने में जब घोर लू रहती है, बेहद गरमी रहती है और वे निर्जला व्रत करती है यानी उस दिन जल नहीं पिया जाए, जबकि डाक्टर कहते हैं कि उन दिनों में सात लीटर से बारह लीटर तक पानी पीना चाहिये। उस दिन वे दृढ़

निश्चय कर लेती हैं कि मेरा एकादशी का व्रत है, निर्जला है। मेरे प्रेमियो! उस दिन उसकी प्यास कहां चली जाती है? भूख कहां चली जाती है; ऐसा भी नहीं है कि वे वातानुकूलित कमरे में रहती हों। कार्यालय जाने वाली कार्यालय जाती हैं। गृहिणी घर का धन्धा करती हैं। हर काम को करती हैं, पर चेहरे पर उदासीनता नहीं होती। उल्टा उस दिन बड़ी प्रसन्नता होती है। न भूख लगी न प्यास लगी। अगर हमारा दृढ़ निश्चय न हो तो क्या फायदा? हमें प्यास लगे तो लिम्का खोल लें, कैम्पा खोल लें, फ्रूटी पी लें, तो कोई बात नहीं इससे निश्चित है कि उसे दृढ़ निश्चय नहीं हुआ और मेरे प्रेमियो! यह बिना विश्वास के नहीं होता।

लक्ष्य बनाने से पहले हमें यह निश्चित दृढ़ निश्चय करना पड़ेगा कि मानव का वास्तविक लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति ही है, भौतिकवाद नहीं है। जब ऐसा हमारा विचार हो जायेगा तो निश्चित लक्ष्य स्वतः ही बन जायेगा और लक्ष्य के बाद हमें उसको दृढ़ करना है। दृढ़ता आ जाने के बाद परमात्मा कभी दूर नहीं होता।

नई बात नहीं है, यह तो पुरातन काल से चली आई है कि परमात्मा की प्राप्ति इसी भौतिकवाद के अन्दर, इसी मृत्यु लोक में, हमसे पूर्व करोड़ों करोड़ों असंख्य मानव प्राप्त कर चुके हैं और अब भी कर रहे हैं। दृढ़ निश्चय, दृढ़ विश्वास मीरा को बना। श्री भगवान कृष्ण और मीरा के काल में बड़ा अन्तर है। भगवान् श्रीकृष्णजी को गये 5098 वर्ष हो चुके हैं और मीराजी का काल अकबर के समय का था। परन्तु वह स्पष्ट लिखती हैं कि–

'थे आज्योजी आधी रात'।

इसका मतलब है कि वह भगवान् साक्षात आते थे। मीराजी अपने पदों में बड़ा स्पष्ट कहती हैं कि जब कभी कृष्ण नहीं आते थे तो वे कहती थीं कि 'वायदा कर के तू नहीं आया'। इससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण वहां पर आते थे। अगर हम दृढ़ निश्चय कर लें तो क्या भगवान् हमारे पास नहीं आयेंगे? अवश्य आयेंगे।

मानवता हमारे पास होगी और लक्ष्य परमात्मा मिलन का हमने बना लिया और उस पथ पर हम चल दिये तो अवश्य लक्ष्य प्राप्ति होगी। चलने पर ही प्राप्ति होती है। अगर हम फरीदाबाद में बैठे-बैठे श्री सिद्धदाता आश्रम पर पूछते रहें कि दिल्ली कितनी दूर है जी? आप कहेंगे कि चौबीस किलोमीटर है। जब तक तुम नहीं चलोगे, यह जिन्दगी भर चौबीस कि.मी. ही बनी रहेगी अगर आप गमन कर देते और पांच-पांच कि. मी. भी चलते तो केवल नौ किलोमीटर ही रह जाती। कहने वाला यही कहता कि नौ कि.मी. रह गई।

लक्ष्य बनाने से पहले हमें यह निश्चित दृढ़ निश्चय करना पड़ेगा कि मानव का वास्तविक लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति ही है, भौतिकवाद नहीं है। जब ऐसा हमारा विचार हो जायेगा तो निश्चित लक्ष्य स्वतः ही बन जायेगा और लक्ष्य के बाद हमें उसको दृढ़ करना है।

लेख

भगवान माला और माल से राजी नहीं होते, बल्कि हमारे कर्मों से प्रसन्न होते हैं। गीता निष्काम कर्मों के द्वारा मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताती है। श्रेष्ठ कर्मों को ही सच्ची भक्ति समझो। इसीलिए अपने कर्मों को ही पूजा बना लो।

जिस प्रकार कमल के पत्ते पानी में रहते हुए भी जल को अपने ऊपर नहीं आने देते। ऐसे ही निष्काम कर्मयोगी संसार में रहते हुए भी कर्मों के बंधन तथा मोह में आसक्त नहीं होते हैं।

गीता संसार को कर्मशील व पुरुषार्थी होने का संदेश देती है। वह हमारे मन में स्वार्थ, लोभ, अहंकार से ऊपर उठकर निष्काम व परोपकार के कर्मों की भावना जागृत करती है। वह श्रेष्ठ कर्म करते हुए इहलोक तथा परलोक दोनों के लिए उन्नति करने के लिए प्रेरणा देती है। हे मनुष्यों, वर्तमान जीवन और जगत को कर्मों की सुगंध से भरते चलो। कर्त्तव्य व दायित्व को ईमानदारी व कुशलता से निभाओ।

गीता कह रही है– योग: कर्मसु कौशलमं अर्थात् जो भी कर्म करो, उसको पूर्णता, निपुणता, सुन्दरता और कुशलता से करो। जो इस तरह से जीवन को जीता है, गीता के अनुसार वह इस जीवन व जगत को सफल कर लेता है और उसका अगला जन्म भी सुधर जाता है।

तन के श्रृंगार में ही जो समय गंवा देते हैं, वह इस नाशवान संसार में भटक कर रह जाते हैं लेकिन जो मन का श्रृंगार कर उसमें बैठे परमात्मा की आराधना करते है वह संसार की मलिनता से बच जाते हैं, वस्तुत: दुर्गुणों से ही जीवन में मलिनता आती है।

इनसे बचने का एकमात्र उपाय वेद शास्त्र और पुराणों का मंथन करना तथा सज्जनों की संगति है। अत: हमें अपने कर्मों पर ध्यान देते हुए जीवन जीना चाहिए।

स्तंभ

सितम्बर माह में आने वाले पर्व

सितंबर 2018	त्यौहार
2 रविवार	जन्माष्टमी
6 गुरुवार	अजा एकादशी
7 शुक्रवार	प्रदोष व्रत (कृष्ण)
8 शनिवार	मासिक शिवरात्रि
9 रविवार	श्रावण अमावस्या
12 बुधवार	हरतालिका तीज
13 गुरुवार	गणेश चतुर्थी
17 सोमवार	कन्या संक्रांति
20 गुरुवार	परिवर्तिनी एकादशी
22 शनिवार	प्रदोष व्रत (शुक्ल)
23 रविवार	अनंत चतुर्दशी
25 मंगलवार	भाद्रपद पूर्णिमा व्रत
28 शुक्रवार	संकष्टी चतुर्थी

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम गतिविधि

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) के अधिपति परम पूज्य गुरुदेव श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज (1) एक छात्र को नामदान की विधि अंतर्गत शंख चक्र लगाते हुए. (2–3) दिव्यधाम में लोककल्याण के लिए तीन दिवसीय पूजन एवं विशिष्ट हवन करते हुए श्री गुरु महाराज जी, उनके साथ हैं स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय के छात्र (4) प्रकृति संरक्षण के लिए आश्रम परिसर के बाहर पौध रोपण करते हुए श्री गुरु महाराज जी (5) श्री गुरुजी के निर्देश पर निर्जला एकादशी के अवसर पर छबील सेवा करते भक्तजन।(6–7) श्री गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में नारायण सेवा के सेवादार भजन कीर्तन करते एवं श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

Postal Regd. No. DL (E)-20/5031/16-18
Regd. under RNI No. DEL HIN/2003/11728
posted on 14 & 15 of every month

श्री गुरू महाराज के दर्शन/भेंट

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम के अधिपति परम पूज्य गुरूदेव श्रीमद जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज (1) बड़ा खटला आश्रम में स्वामी रामेश्वराचार्य जी के पट्टाभिषेक कार्यक्रम में शामिल होते हुए, (2) हरियाणा के कैबिनेट मंत्री श्री रामबिलास शर्मा जी (3) विधायक नगेंद्र भड़ाना (4) भाजपा नेता श्री राजेश नागर जी व साथियों को आशीर्वाद एवं प्रसाद करते हुए। (5–6) श्री गोबिंद भाई के साथ हवन करते एवं श्री गुरू महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते विदेश भक्तगण और (7) गुरूजी का सान्निध्य लाभ लेते फ्रांस के पर्यटक।

ReSourceMedia (9811908349)

जनहित जागृत सत्कार्य केंद्र के लिए प्रकाशक मुद्रक ... शर्मा द्वारा पारस ऑफसेट प्रोसेस, ... लक्ष्मीनगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित व ई–9 मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक–... अवैतनिक